कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः01 अक्टूबरः 2012

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल
साहित्य/भाषा परामर्शक
डॉ० दुर्गाशरण मिश्र, रोहतास, बिहार

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

नागप्पा जी की जन्मशती पर विशेष.......... 06
-गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

भारतीय संस्कृति में धर्मनिरपेक्षता.................. 07
-बालाराम परमार 'हंसमुख'

अंग्रेज गये अंग्रेजी जाये, देश में अपनी हिन्दी छाये...10
-डॉ० एन.एस.शर्मा

भारत की सांस्कृतिक एकताःसाध्य और साधन........12
-एस.बी.मुरकुटे

नेता नहीं मतदाता सुधरें 13
-समाज प्रवाह, मुंबई

दक्खिनी हिन्दी काव्य-रूप 15
-डॉ० वि.रा.देवगिर्री

राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए मुंशी प्रेमचन्द्र का योगदान......19
-डॉ० पांडुरंग परात

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग	04
अपनी बात	05
कविताएँ	24–29
अध्यात्म	11,14,20
पुनरावृत्ति (कहानी) : डॉ0 अनीता पंडा	17
पंछी (कहानी) : हरिहर चौधरी	22
आपकी डाक	30
साहित्य समाचार–	31, 32, 33
लघु कथा	32
समीक्षा	34

सत्य मार्ग का अनुसरण करना कठिनाई भी दे सकता है, जिनका डटकर सामना करना मानव के उत्तम गुणों का परिचायक है.

++++++++++++++++++++++++++

जीवन में आलस्य प्रगति का अवरोधक है, इससे मानव की कल्पनाएं, आशाएँ धूल में मिल जाती हैं. आगे बढ़ने की अपेक्षा वह बीच में ही पतित हो जाता है. आलस्य कर्तव्य का शत्रु हैं.

++++++++++++++++++++++++++

शिक्षा का उपयोग तभी है, जब उससे दूसरों को कुछ प्रदान की जा सके, बंधी शिक्षा उस पोखरे में भरे हुए जल के समान है जो कुछ समय बाद स्वयम् सूख जाती है और अप्रयोजनीय हो जाता है. विद्यादान शिक्षा की मूर्ति पूर्ति हैं.

++++++++++++++++++++++++++

सत्य बोलना पुण्य है जबकि असत्य का अनुसरण क्या है. जीवन के अन्तिम क्षण तक सत्य का पालन करते रहो, आपको इसका प्रतिफल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य मिलेगा.

+++++++++++++++++++++++++++++++

परिश्रम से न घबराओ, कार्य करते रहो, सफलता एक न एक दिन अवश्य मिलेगी. सब्र से काम लो और धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा करो, फल मिलेगा.

+++++++++++++++++++++++++++++++

सहनशक्ति के बराबर दूसरी शक्ति कम मिलती है, क्योंकि इससे अपना तथा दूसरों का हित समान रूप से सन्निहित हैं.

+++++++++++++++++++++++++++++++

सुन्दरता जिसकी ओर आज का मानव झुक रहा है केवल रूप की लिप्सा, पिपासा का धारण कहा जा सकता है. भौतिक सुन्दरता नश्वर है, अस्तित्वहीन है, इसके पीछे दौड़ना अपने तथा अपने झुकाव को नीचे गिराना है.

+++++++++++++++++++++++++++++++

यदि मन में चिन्ताएं हुई तो हमारे सारे कार्यकलाप अप्रसन्नता से भरे हुए होते हैं. काम में मन नहीं लगता और उत्साह क्षीण रहता है. चेहरे पर एक विचित्र उदासी बनी रहती है. कुछ अच्छा नहीं लगता चारो तरफ उसे लगती है उदासी-उदासी-उदासी.

✍**दाऊजी**

आदाब अर्ज़ है

एक राजनीतिक दल की सभा में उपस्थित जन समुदाय

जन सुरक्षा के लिए तैनात पुलिस निरीक्षक

घोटालों का देश या देश में घोटाला?

एक समय था जब लाखों के घोटालें होते थे और देश में कोहराम मच जाता था. लेकिन अब तो घोटाले लाख करोड़ में होने लगे हैं. ऐसा नहीं है कि ये घोटाले लाख वाले खत्म हो गये हैं. घोटालों की श्रृंखला 1 रुपये से प्रारम्भ होती है और अरबों में पहुंचती है. ये घोटाले केवल केन्द्रीय सरकार के नहीं है. अगर सही तरीके से जांच हो तो लोकतंत्र के सबसे नीचले भाग ग्राम सभा, नगर पंचायत से शुरू होकर संसद तक जाती है. अब लाखों में घोटाले तो ग्राम सभा स्तर पर ही होने लगे हैं. इन घोटालों में भारत की 98 प्रतिशत ग्राम सभाएं, नगर पंचायतें, जिला पंचायते व शत प्रतिशत राज्य सरकारें समाहित है. सूचना अधिकार अधिनियम, कैग, सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं से सत्तासीन पार्टियों के घोटाले उजागर होते हैं. जिन्हें विपक्षी पार्टिया लपक कर विधानसभा और लोकसभा ठंप्प करती है तथा आम जनता की गाढ़ी कमाई का करोड़ों रुपये बबार्द करती है. फिर हमारे बीच आकर बड़े शान से कहती है हमने फला मुद्दे पर संसद/विधानसभा इतने दिन नहीं चलने दी. पब्लिक को बेवकूफ बनाती है और कहती है कि अगर मेरी सरकार आएगी तो मैं इन घोटालों की निष्पक्ष जांच कराऊँगा, घोटाले बाजों, भ्रष्ट मंत्रियों/अधिकारियों को जेल की हवा खिलाऊंगा. चुनाव आते है जनता विपक्षी पार्टियों को इस आशा से वोट करती है कि ये स्वच्छ सरकार चलायेगें. मगर कुर्सी मिलते हीं खुद ही घोटाले व भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते है. धीरे-धीरे पांच साल निकल जाते हैं फिर वही कहानी दोहरायी जाती हैं अथवा अगर विपक्ष बहुत आक्रामक नहीं हुआ तो वहीं भ्रष्ट सरकार फिर आ जाती है और विपक्षी अगले चुनाव में कुर्सी पाने के लिए मौके की फिराक में लगे रहते हैं.

आज तक अपने देश में जितने भी घोटाले हुए हैं उन घोटालों में कोई भी बड़ा नेता या बड़ा अधिकारी जेल शायद नहीं गया है अगर गया भी है तो वो भी दिखावे के लिए. एक आम चोर, एक कार्यालय का बाबू हजार दो हजार रुपये घूस लेने के जुर्म में दसियों साल जेल में सड़ता रहता है मगर लाखों-करोड़ों का घोटाला करने वाले ये नेता/अधिकारी अधिकतम छह महीने के अंदर बाहर. अन्ना हजारे जी कहते हैं लोकपाल कानून बनाओं भ्रष्टाचार कम होगा, रामदेव कहते हैं काला धन वापस लाओ. मेरे हिसाब से इस देश को कानून की नहीं, बल्कि कानून का वास्तविक पालन कराने वालों की जरुरत है. अगर कानून लाना ही है तो कोई ऐसा कानून लाओ जिसमें भ्रष्टाचार करने वालों (सही पाये जाने पर) से वास्तविक भ्रष्टाचार की पूरी रकम जांच खर्च सहित वसूलने का अधिकार हो. अपने आप भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा. लेकिन इसके लिए सही जांच एजेंसी/अधिकारी कहां से लाओगें अमेरिका, ब्रिटेन या जापान से. पहले ईमानदार अधिकारियों को तो पैदा करो जो सहीं जांच कर सके.

हम विदेश में पड़ा काला धन लाने की रट लगाते हैं अरे विदेश में पड़े काले धन को छोड़ा पहले देश में पड़े काले धन को तो निकालों. जिस देश के एक राज्य मध्य प्रदेश में एक चपरासी के घर से १०-२० करोड़ रुपये नगद मिल रहे हों उस देश के प्रशासनिक अधिकारी व नेताओं की औकात का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है.

ऐसा नहीं हैं कि केवल वर्तमान केन्द्रीय सरकार घोटालेबाज है और एनडीए, कथित तीसरे मोर्चे की पार्टियां दूध की धुली हैं. हमाम में सब नंगे हैं. कोई १८ तो कोई २१. बस मौका चाहिए. कौन कितनी सफाई से हाथ साफ किया.

यूपीए सरकार तो भ्रष्टाचार, घोटाला, महंगाई आदि मुद्दों पर बेनकाब हो ही रही हैं मगर विपक्षी पार्टियां उससे भी दो कदम आगे हैं. उन्हें केवल वोट बैंक दिखायी पड़ता हैं. मुख्य विपक्षी पार्टी भारतीय जनता पार्टी में ऐसी कूबत नहीं बची कि वह किसी मुद्दे पर सत्तासीन यूपीए को झुकने के लिए मजबूर कर सके. वह तो केवल विरोध करने के लिए विरोध करती हैं. विरोध के केवल वे तरीके अपनाती है जिससे जनता समझे वे हमारे हितैषी है. लेकिन जनता अब बेवकूफ नहीं रही. उसे भी समझ में आता है कौन पार्टी क्या और क्यों कर रही हैं. सिर्फ मंच पर चढ़कर लच्छेदार भाषण की जरुरत नहीं है. आम आदमी को भी चेतना होगा तभी कुछ हो पाएगा. केवल कोसने से काम नहीं चलेगा.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

दक्षिण भारत में हिन्दी के पितामह कहे जाने वाले

नागप्पा जी की जन्मशती पर विशेष

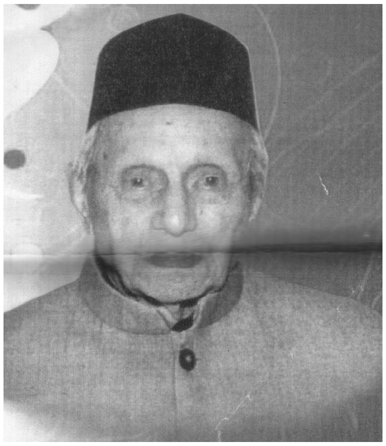

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कर्नाटक के मंड्या जिले के अक्किहेब्बाल गांव में ३० अप्रैल १९१२ को जन्में नागाशास्त्री नागप्पा जी के पिता का नाम नागाशास्त्री और मां वेंकटलक्ष्मा था. चार वर्ष की उम्र में ही मां-बाप का निधन हो गया. इनका पालन पोषण इनकी बुआ ने किया. १९२८ में हाईस्कूल परीक्षा में पूरे राज्य में दूसरा स्थान प्राप्त किया. १९३० में इंटरमीडिएट, १९३३ में गणित आनर्स के साथ स्नातक में सफलता प्राप्त की. उस समय तक नागप्पा जी हिन्दी वर्णमाला से भी अनभिज्ञ थे. १९२४ में बेलगांव में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी ने किया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव पास किया गया. इसके बाद दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार-प्रसार आगे बढ़ा और नागप्पा जी के मन में हिन्दी के प्रति ललक जगी. १९३२ में उन्होंने राष्ट्रभाषा परीक्षा पास की और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से परास्नातक करने चले आये. सम्पूर्ण दक्षिण भारत में हिन्दी में परास्नातक करने वाले वे पहले छात्र थे. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्याम सुन्दर दास, केशव प्रसाद मिश्र, डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा जैसे गुरूओं के सानिध्य में उन्होंने १९३५ में परास्नातक-हिन्दी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की. अप्रैल १९३५ में गांधी जी के ही आदेश से नागप्पा जी ने मद्रास में हिन्दी प्रचारक के रूप में कार्य आरम्भ किया. बाद में वे हिन्दी प्रचार के लिए धारवाड़ और मैसूर गए. उनके मैसूर आने से हिन्दी सेवा के एक नए अध्याय का सूत्रपात हुआ.

१९३८ में मैसूर विश्वविद्यालय में हिन्दी व्याख्याता बनें और आजीवन हिन्दी की सेवा करते रहें. १९६२ में रीडर, १९६५ में हिन्दी प्रोफेसर नियुक्त हुए. ३० अप्रैल १९७२ को सेवानिवृत्ति के समय तक हिन्दी विभागाध्यक्ष रहें. सेवानिवृत्ति के उपरान्त वे १९७७ तक वहीं अतिथि प्रोफेसर रहें.

प्रो.नागप्पा की चार सौ पृष्ठ की व्याकरण कृति 'व्यवहारिक हिन्दी' १९५८, 'अभिनव हिन्दी व्याकरण' व कहानी संग्रह 'बुआजी' १९७१, 'शिक्षार्थी हिन्दी व्याकरण' १९९६ में प्रकाशित हुई. 'कर्नाटक में हिन्दी प्रचार' पुस्तक के द्वारा नागप्पा जी ने १९८२ में कर्नाटक में हिन्दी सेवा का सर्वेक्षण किया. गांधीपूर्व युग से इसमें कर्नाटक में हिन्दी प्रचार का रेखांकन है. १९८३ में 'हिन्दी साहित्य का अध्यापन', १९८६ में कन्नड़ हिन्दी अंग्रेजी कोश प्रकाशित हुई. १९९२ में कर्नाटक के इतिहास, संस्कृति, वर्तमान और भविष्य के प्रश्नों का समाधान करने वाली पुस्तक 'कर्नाटक' प्रकाशित हुई. उनका रचना संसार अभी बिखरा पड़ा है. जिसे समेटने की आवश्यकता है.

नागप्पा जी ने पर्याप्त संख्या में कन्नड़ से हिन्दी और अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद भी किए हैं. डॉ. वी. सीतारामैया के कन्नड़ यात्रा वृत्त 'पम्पायात्रा' का हिन्दी अनुवाद १८७५ में प्रस्तुत किया. अनगिनत पत्र-पत्रिकाओं के लिए नागप्पा जी ने कन्नड़ और अंग्रेजी रचनाओं के अनुवाद किए. ए. एन.मूर्तिराव की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'देवरू' का 'ईश्वर' नाम से अनुवाद उन्होंने २००३ में किया. कन्नड़ के नाट्यसमीक्षक श्री आर.गुरूराजा राव की पुस्तक 'कन्नड़ रंगमंच' का अनुवाद २००२ और २००४ में एक कन्नड़ कृति का अनुवाद 'मैसूर के वीणा विद्वान वेंकटगिरियप्पा' नाम से किया. अंग्रेजी से उन्होंने 'श्रवणबेलगोल' और 'बेलूर' पर डॉ. एम.एच.कृष्णा की पुस्तकों के अनुवाद भी प्रस्तुत किए.

उनकी हिन्दी सेवाओं के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की हिन्दी समिति ने १९८१, बिहार सरकार ने १९८३, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने १९८६, बिहार सरकार के राजभाषा विभाग ने १९७७, कर्नाटक हिन्दी साहित्य अकादमी ने २००३ में विभिन्न सम्मानों व राशियों से समलंकृत किया. ९० वर्ष की आयु में ११ अगस्त २००२ को छात्र छात्राओं द्वारा उनका अभिनन्दन किया गया.

आदर्श हिन्दी शिक्षक, हिन्दी सेवी, अनुवादक, बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी ना.नागप्पा जी का निधन २००६ में ९७ वर्ष की उम्र में हो गया. मेरी ..

.शेष पृष्ठ २१ पर.....

भारतीय संस्कृति में धर्मनिरपेक्षता

■वन्दा नवाज की रचना 'मिराजुल आशिकीन' खड़ी बोली हिन्दी की पहली प्रामाणिक कृति मानी जाती है.

■दक्खिनी के अन्तिम कवि वली को ही उर्दू का प्रथम कवि माना जाता है.

✍बालाराम परमार 'हंसमुख'

साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, पृथकतावाद एवं संकीर्णतावाद आदि के साथ-साथ कुछ ऐसे और भी मानसिक विकृति फैलाने वाले अवजात विचार हैं जो समृद्ध-उज्जवल भारतीय संस्कृति पर काला धब्बा लगा रहे हैं. संविधान के अनुसार भारत को सम्पूर्ण प्रभूत्व सम्पन्न पंथनिरपेक्ष समाजवादी सर्वगुण सम्पन्न, सर्वशक्तिमान राष्ट्र बनाए रखना है तो सबसे पहले साम्प्रदायिकता एवं धार्मिक संकीर्णता जैसे अमानवीय एवं घिनौनी मानसिकता की शल्यक्रिया करना अपरिहार्य हो गया है. भारत में विद्यमान धर्मो के मठाधीशों में कुछ ऐसी गलत फहमियां पनपती जा रही है जिनके चलते सभी कौम के बीच वैमनस्य बढ़ने लगा है. बात-बात पर साम्प्रदायिक झगड़े शुरू होना आम बात हो गई है. गहराई से मनन करें तो हम पाते हैं कि साम्प्रदायिकता की किसी मत या धर्म या सिद्धात की लड़ाई नहीं होती बल्कि यह अंधेपन एवं क्षुद्र राजनीतिक मानसिकता की लड़ाई होती है. एक ऐसी सोच की लड़ाई होती है जिसका आधार फ़िरका परस्ती, दीर्घीकरण, राजनीतिक और प्रलंभन सोच हैं.

भारत भू पर घिनौनी चाल एवं सोच लम्बे समय तक कभी भी नहीं चली है. जब भी यहां के वासिदों को लगा कि कुछ गलत हो रहा है, उन्होंने ऐसी घिनौनी सोच को केंचुली की तरह उतार फेंका है. क्योंकि भारत में धर्मनिरपेक्षता का एक ऐसा बौद्धि वृक्ष कानन है जहां से सम्यक ज्ञान, सम्यक दृष्टि एवं सम्यक चिंतन की बयार बहती रहती है. भारतीय वाङमय में धर्म निर्पेक्षता का स्थान अप्रतिम है. पौराणिक या मध्य या आधुनिक काल में ऐसा कोई काल नहीं है जिसमें धर्मनिरपेक्षता का वर्चस्व न रहा हो. आजाद भारत ने तो धर्मनिरपेक्षता को राष्ट्र की आत्मा बना लिया है. धर्म निरपेक्षता के सम्बन्ध में दो प्रबल मत प्रचलित है. एक मत, जो भारतीय परम्परा से पर्याप्त परिचित है और धर्मनिरपेक्षता भाव की प्रगाढ़ता पर शांति व सद्भाव के साथ विचार करता है. दूसरा मत, उन लोगों का है जो अपने को प्रजातंत्र प्रहरी मानते हैं. और धर्मनिरपेक्षता को संविधान की भाषा शैली एवं विषय वस्तु को आधुनिक स्वतंत्रता की पद्धति एवं कसौटी पर कसना चाहते हैं. वे ऐसा मानते है कि सनातन भारतीय-संस्कृति में धर्म निरपेक्षता की गाथात्मक, प्रतीकात्मक एवं रहस्यात्मक प्रकाश में देखना व्यर्थ है. अतः भारतीय संस्कृति में धर्मनिरपेक्षता तथा संविधान में वर्णित निरपेक्षता में अधिकांश विद्वान भेद करते हैं.

मेरे विचार में प्राचीन धर्म निर्पेक्षता भाव एवं आधुनिक धर्म निर्पेक्षता सिद्धात को राजनीतिक स्वार्थ की कसौटी पर परखना एवं कसना स्वयं धर्मवीरूता है. धर्म निर्पेक्षता को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् भाव में समझने के लिए प्राचीन सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन शैली एवं पद्धति से अवगत होना जरूरी है. मेरी ऐसी दृढ़ मान्यता है कि नवोदय एवं सर्वोदय भारतीय इतिहास रचने तथा संस्कृति को पल्वित-पुष्पित करने के लिए जहां पौराणिक धर्मनिर्पेक्षता भाव का अन्वेषण अनिवार्य है, वहीं प्रजातंत्र की सुदृढ़ता के लिए संविधान में वर्णित धर्मनिर्पेक्षता को भी निर्पेक्षभाव से समझना आवश्यक है. यह परम् सत्य है कि भारतीय संस्कृति के मानवता मूलक होने पर ही स्वतंत्र भारत के संविधान की रूप रेखा में सम्पूर्ण प्रभूत्व सम्पन्न समाजवादी पंथनिर्पेक्ष गणराज्य का भाव अंकुरित हुआ है. संविधान सभा के सभी गणमान्य सदस्यों ने एकमत एवं एकरूप में धर्मनिर्पेक्षता भाव को राष्ट्र संस्कृति एवं परम्परा भाव-रूप में अंगीकार किया.

जैसा कि बारबार कहा जाता है कि और हर बार कहा जाता रहेगा कि धर्मनिर्पेक्षता भारतीय संस्कृति की महान एवं पवित्र विशेषता रही है. हमारे भारतवर्ष में हर धर्म, मत, जाति, भाषा एवं

समुदाय को स्वाभाविक समभाव से देखा-परखा और समझा गया है. संविधान के अनुसार भारत एक सम्पूर्ण प्रभूत्व सम्पन्न समाजवादी पंथनिर्पेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य है, जिसमें प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समानता तथा हम सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता-अखण्डता सुनिश्चित है. यह भाव आजादी के तुरन्त बाद एकाएक पैदा नही हुआ. इस मानवीय सोच की जड़े पहली सदी तक जाती है तब सनातन धर्म का बोलबाला था. सनातन धर्म वसुधैव कुटूम्बकम का धर्म था. सर्वेभूमि गोपाल की विचार धारा का पोषक था. बाद में तीसरी सदी के आसपास बौद्धधर्म का प्रार्दुर्भाव हुआ और वह सनातन धर्म के साथ-साथ खूब फला-फूला. सम्पूर्ण एशिया में आच्छादित हो गया. बौद्ध धर्मावलंबियों की हिन्दूओं के साथ अच्छी निभी. मंदिरों के आसपास व समकक्ष ही बौद्धविहार का निर्माण हुआ. दोनों धर्मो के रीति-रीवाज में काफी समानता थी और आज भी देखने को मिलती है. डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने अपने विशाल जन समुदाय के साथ बौद्धधर्म ग्रहण किया और लोग बुद्धिस्ट कहलाने लगे लेकिन आज भी यह समूचा धार्मिक समुदाय हिन्दू धर्म का हृदय से आदर करता है तथा हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना में आस्था रखता है. गणेशोत्सव के अवसर पर लाखों की संख्या में बौद्ध अनुयायी बढ़ चढ़ कर भाग लेते देखे जा सकते हैं. इसे धर्म निर्पेक्षता भाव की पराकाष्ठा कहा जा सकता है.

धर्म निर्पेक्षता के मायने किसी एक धर्म का पक्ष लेना ही नहीं है अपितु हर धर्म का समान रूप से आदर करना तथा पवित्र आदर्शो को जीवन में उतार कर एक मिसाल कायम करना भी होता है. भारत-भू की संस्कृति इसका जीता जागता उदाहरण है. पांचवी सदी के आसपास जैन धर्म का पदार्पण हुआ और आज तक किसी भी जैन तीर्थकर ने कभी भी अन्य धर्म या मत की आलोचना नहीं की. धार्मिक सहिष्णुता भाव की प्रधानता के कारण जैन धर्मावलंबियों को हिन्दूओं से अलग करके परखना लगभग असंभव-सा है. जिनेन्द्रों की भारत के अन्य धर्मो के लोगों के साथ अटूट सौहार्द्र एवं भाईचारा है. जैन धर्मावलंबी राखी, होली, दीपावली, ओणम्, पोगंल, बिहू, लोहड़ी, दूर्गापूजा, गणेशोत्सव आदि त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं. इसे भारतीय परम्परा में धर्मनिर्पेक्षता भाव परम्परा की गहरी नींव कहा जा सकता है.

मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, गिरजाघर, मठ आदि मे परम्परा रही है. हिन्दुओं की दीवाली मानों मुसलमानों की चाहत हो और मुसलमानों की ईद तो हिन्दूओं के लिए सेवइयां खाने का दिन हो. यहां हर पर्व, हर मज़हब का इंसान धूम-धाम से मनाता है. जब तेरवहीं सदी में इस्लाम का प्रचार-प्रसार होने लगा तब से आज तक धर्मनिर्पेक्षता देखने को मिलती है. राजा इस्लाम धर्म को मानने वाला और प्रजा हिन्दू धर्मी. यह सिलसिला १५ अगस्त १९४७ तक चलता रहा. हैदराबाद, अहमदाबाद, तुगलकाबाद, अहमदनगर, शाहजहानाबाद बसते रहे और हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियां मंदिरों में स्थापित होती रहीं. मूर्तियों की पूजा-अर्चना होती रही. फैज़ाबाद बस गया पर रामलला विराजमान रहे. विश्व प्रसिद्ध ताजमहल इमारत मथुरा-वृंदावन की प्रसिद्धि, श्रद्धा तथा भक्ति को कम नहीं कर पाई. अनेक इस्लाम धर्मावलंबी राजाओं-सामन्तों ने अपने किले में मंदिर-मस्ज़िद साथ साथ बनवाए. तन्ना पाण्डेय जो तानसेन के नाम से विख्यात हैं. वे अपने एक बेटे का नाम विलास खां तथा पुत्री का नाम सरस्वती रखा था. ग्वालियर में तानसेन की मज़ार हैं जहां सभी धर्म के लोग चार चढ़ाते हैं. कहते हैं कि बाबा अमरनाथ गुफा की खोज एक मुसलमान गड़रिया ने की थी. वह चाहता तो इस गुफा को अपना मज़हबी रंग दे सकता था. इसके अलावा असंख्य ऐसे उदाहरण है जो एक हजार बरस की धर्म निर्पेक्षता दास्तां बयान करते हैं.

संविधान में भी कश्मीर से लेकर निकोबार तथा नागर हवेली से लेकर मेकमोहन रेखा तक भारतीय एकता-अखण्डता का नारा गूंजता है. एक तिरंगा, एक राष्ट्रगान, एक मुद्रा, एक राष्ट्रीय हित. इसका मतलब क्या है? यही न की देश से बढ़कर नहीं है मज़हब. देश से बढ़कर नहीं है आदमी, हो भी नहीं सकता? क्योंकि अल्लाह, राम, कृष्ण, गुरूनानक, महावीर, बुद्ध तथा जीसस को मानने वाले भली भांति जानते हैं कि सभी धर्म में सिर्फ इंसानियत को ही अहमियत दी गई है. जब धर्म एक है-पंथनिरपेक्ष, जब पूजा एक है-राष्ट्रपूजा, जब लक्ष्य एक है-राष्ट्र विकास तो फिर काहे का हिन्दू? काहे का मुसलमान? काहे का सिक्ख, बौद्ध, पारसी? राजनीतिक सार्वभौम सत्ता के अभाव में धर्म, जाति, भाषा, प्रांत की अवधारणा अर्थहीन व खोखली है. यह पवित्र समझ केवल सद्भावना पूरित-पोषित-पल्वित इंसान में ही हो सकती है और वह इंसान है-भारतवासी, हिमालय और हिन्द महासागर के बीच का निवासी-हिन्द देशी.

गुरूनानक देवजी ने 'पंचप्यारों' उद्घोष के साथ जब से सिक्ख धर्म की स्थापना की तब से लेकर आज तक सिक्खों ने

कभी किसी धर्म के प्रति घृणा नहीं फैलाई. अपने देश-मज़हब रक्षार्थ जान तक न्यौछावर करने की कसम खाई और जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल का नारा बुलंद कर सबकी सलामती की दूआ मांगने की पवित्र परम्परा कायम की. परम्परा को कायम रखते हुए सिक्ख समान रूप से सभी धर्मो का आदर करता है.

जब इस देश की धरती पर यूरोपियन आए और ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करने लगे तब यहां हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, सिक्ख तथा जैन का बोलबाला था. फिर भी ईसाई धर्म भारत के कोने-कोने तक फैला और असंख्य लोगों ने आत्मसात किया. इसके क्या माने निकाले जाँय? जितने भी अर्थ निकलते हैं, सब के सब धर्मनिर्पेक्षता एवं सद्‌भावना की ओर इशारा करते हैं. शिर्डी के साई बाबा किस धर्म के भगवान हैं? हिन्दू के, मुसलमान, सिक्ख, बौद्ध के या फिर पारसी के? क्यों सब धर्म के लोग वहां जाते हैं? क्यों हर मज़हब के लोग अजमेर शरीफ जाकर सलामती की दूआ मांगते हैं? क्यों सबके लिए स्वर्ण मंदिर का द्वार खूला है? क्यों सब धर्म के लोग भगवान जगन्नाथ का रथ खिंचते है? गंगा, यमुना, शिप्रा, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा, सदानिरा केवल हिन्दुओं के लिए पवित्र है? मुसलमान, पारसी या ईसाई के नहाने से अपवित्र होगी? क्यों सब धर्म के लोग आबू पर्वत, वैष्णव देवी, पावागढ़, कामाख्या, अमरनाथ, केदारनाथ, बद्रीनाथ जाते हैं?

इस तरह प्रश्न तो इतने हैं कि सुनते-सुनते कान के पर्दे फट जाएंगें. उनके पाषाण हृदय में भूचाल आ जाएगा. लेकिन ऐसा तभी होगा जब हर कट्टरपंथी धर्म के ठेकेदार अन्य ध र्म के प्रति धर्म निरपेक्षता भाव का अंकुरण प्रस्फूटित करें. यह संभव है क्योंकि भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा में सहिष्णुता, सौहाद्रता, समता, सद्‌भावना तथा धर्मनिर्पेक्षता भाव के प्रस्फूटन, संवरक्षण एवं प्रगाढ़ता की एक लम्बी परम्परा पोषित रही है. ध र्मनिर्पेक्षता केवल एक संवैधानिक बंध ान नहीं है. यह संविधान में मिली स्वतंत्रता के बदले दिया जाने वाला भूगतान भी नहीं हैं. यह तो आदी-अनादी काल से चली आ रही पवित्र भावना है. भारत देश मे देश भक्तों, संतो, महापुरुषों तथा त्यागियों का समयानुसार अनावरत जन्म होता रहा है. धर्म निरपेक्षता के संदर्भ में सबसे अधिक गौरव की बात यह है कि भारत-भू पर जन्म लेने वालों ने विश्व को समय-समय पर सत्य, अहिंसा, त्याग, बलिदान, समता, सहिष्णुता, मानवधर्म का पाठ पढ़ाया. भारत में विशाल हृदय वालो धर्मो का जन्म हुआ. हमारे यहां दूसरे देश की धरती के मजहब आये. सभी को हिन्द देश के वासिन्दों ने एक ही संदेश दिया 'तुमने जीते है देश-धरती तो क्या, हमने तो मानवता को जीता है और जी भर के जीया भी हैं.'

धर्मनिर्पेक्षता जैसे अनुपम उदाहरण के साथ भारत आज तक तेजी से ज्ञान-विज्ञान व विकास के पथ पर अग्रसर होता आया है. प्राचीन काल में हिन्दू तथा मुसलमान राजा साथ-साथ शासन करते आये हैं. वहीं परम्परा आजादी के बाद भी कायम है. पंथ निरपेक्षता के संदर्भ में भारतवासियों का सिर हमेशा से ऊंचा रहेगा. हमारे यहां लगभग सभी धर्मो के अनुयायी बड़े पदों को सुशोभित करते आये हैं. सभी धर्मो के लोग एक साथ बैठकर देश का शासन चलाते आये हैं. इन सब पवित्र भावनाओं को संवैधानिक बाध्यता का दर्जा नहीं दिया जा सकता. इससे भी ऊपर उठकर एक बाध्यता है-सनातन धर्म निर्पेक्षता भाव की. शायद यही वजह है कि हम गर्व से गाते है-

मज़हब नहीं सिखाता
आपस में बैर रखना
हिन्दी है हम वतन है,
यह गुलिस्तां हमारा।

० बालाराम परमार 'हंसमुख'
उप-प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-०१, देहू रोड, ४१२१०१, पूने, महाराष्ट्र

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011

अंग्रेज गये अंग्रजी जाये, देश में अपनी हिन्दी छाये

✍ डॉ० एन.एस.शर्मा

दिल्ली में पोलेंड के राजदूत सर ब्रिसकी ने कहा था कि यह विडम्बना ही तो है कि जहां हिन्दी जैसी दर्जनों उन्नत भाषाएं हो और फिर भी वहां के शासन की अपनी भाषा न होकर कोई वह विदेशी भाषा हो

श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित जब रूस में भारतीय राजदूत बनकर गई थी तो उनके अंग्रेजी में लिखे परिचय पत्र को स्टालिन ने फेंकते हुए कहा था कि क्या आपकी अपनी कोई भाषा नहीं है जो तुम अंग्रेजी की बैसाखी के सहारे चलती हो? कुछ समय पूर्व दिल्ली में पोलेंड के राजदूत सर ब्रिसकी ने भी कहा था कि यह विडम्बना ही तो है कि जहां हिन्दी जैसी दर्जनों उन्नत भाषाएं हो फिर भी वहां के शासन की अपनी भाषा न होकर कोई विदेशी भाषा हो जिसे यहां के संविधान द्वारा भी मान्यता न दी गई हो. हिन्दी को तो आज अनेक विदेशी भी गोद लेने को उत्सुक हैं. राजभाषा का ताज धारण करने वाली हिन्दी मल्लिका होकर भी भीख का कटोरा हाथ में थामें यहां के संसद के दरवाजे पर अपने हक की भीख मांगती प्रतीत होती है. रानी होकर भी कब तक यह अपनी दासी अंग्रेजी के चरण ऐसे ही धोती रहेगी? अंग्रेजी को ही यदि राजभाषा के रूप में प्रयुक्त करना था तो फिर अंग्रेजों को यहां से निकालने की जरुरत ही क्या थी?...इस प्रकार हिन्दी के प्रति ऐसी कामना व्यक्त करते हुए उन्होंने अपना पूरा भाषण हिन्दी में ही देकर उपस्थित सभी श्रोताओं का दिल जीत लिया.

सभी जानते हैं कि हमारी यह घुम्मकड़ हिन्दी उत्तर में जन्मी, दक्षिण में पली और अब अपनी यौवनावस्थाा में अर्थात् स्यानी होकर सागर पार आज रूस, मारीशस, गुयाना, त्रिनीदाद, नेपाल, तिब्बत, सूरीनाम, वर्मा, इंग्लैंड, फिज़ी, पाकिस्तान, बांग्लादे और अमेरिका आदि ३२ देशों के १२८ विश्वविद्यालयों में चहल कदमी करती फिर रही है. वहां हिन्दी के अनेक दिग्गज ज्ञाता है और हिन्दी के समाचार पत्र और पत्रिकाएं वहां पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित होती हैं. वहां के आकाशवाणी और दूरदर्शन केन्द्र भी हिन्दी कार्यक्रम रिले करते हैं. फिजी, मारीशस, वर्मा और त्रिनीदाद में तो आधे लोग भारतीय मूल के ही हैं. वहां सड़कों और स्टेशनों पर हिदायतें स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी में भी लिखी जाती है. इंग्लैड और अमेरिका में भी यह दूसरे नम्बर की भाषा हो चली है. इन देशों में वसने वाले ६०-६५ लाख भारतीयों के अतिरिक्त वहां रहने वाले बांग्लादेश, पाकिस्तान, भूटान, नेपाल औ वर्मा आदि के लोग आपसी बातचीत अंग्रेजी के बाद हिन्दी में ही करते हैं. इस प्रकार अनेक देश इसे स्वेच्छा से अपना रहे हैं और अब तो यह संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं में भी सम्मिलित होने की ताक में हैं.

हमारी सभी बोलियों एवं भाषाओं का शब्द भंडार तो विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली चीनी भाषा मंदारिन से भी चौगुना तथा विश्व की शेष भाषाओं से दर्जनों गुणा ज्यादा उतरेगा. वैज्ञानिक और तकनिकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार किये जा रहे विज्ञान, कला एवं वाणिज्य व चिकित्सा आदि विषयो के भी तैयार हिन्दी शब्दों के इसमें जुड़ने से तो इसकी शब्द संख्या निरन्तर बढ़ रही हैं. फिलहाल अंग्रेजी की शब्द संख्या अढ़ाई लाख है जबकि हिन्दी की सात लाख है. डॉ०. रघुवीर के अनुसार हमारी शब्द संख्या तो इतनी अधिक है कि इसमें एक ही धातु से ३०० से भी अधिक शब्द बनाये जा सकते हैं और मात्र करना, होना व पाना धातु को ही जान लेने पर इन्सान का काम चल सकता है. उनके ही अनुसार भौतिकी, रसायन, शैल्य चिकित्सा एवं खगोल आदि विज्ञानों में तो हमारे शब्द जावा, वाली, सुमात्रा, चीन, मंगोल, थाईलैंड एवं साईबेरिया तक फैले हुए हैं. इसके अतिरिक्त मध्य एशिया के अनेक ग्रंथों में भी वे देखे जा सकते हैं. ब्रह्म के लिये, जीव के लिये, जगत और मोक्ष आदि के लिए एक-एक शब्द हमारे यहां जितने भिन्न-भिन्न शब्द है उतने शब्द सारी यूरोपिय भाषाओं में कुल मिलाकर भी नहीं है. भारत की अन्य भाषाओं के शब्दों को भी यदि एक जगह एकत्र किया जाय तो वे कम से कम ७० लाख से कम नही उतरेंगें. हिन्दी के ही पुराने और अप्रचलित शब्दों की संख्या अगणित है.

आज भी अनेक लोग यह मानते हैं कि दुनिया का सारा ज्ञान केवल अंग्रेजी में ही है. परन्तु यह बिलकुल गलत है क्योंकि दुनिया की अनेक भाषाओं में अंग्रेजी से भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण कार्य और अनुसंधान हुए है. आज विज्ञान की जितनी पुस्तकें रूसी भाषा में हैं, उतनी दुनिया की किसी भी भाषा में नहीं है. जर्मन भाषा में काट, हीगल

जीवन के लिए त्याग जरुरी

-प्रभाशंकर

महात्मा अक्सर अपने प्रवचनों में कहा करते हैं कि मरने के बाद कुछ भी साथ में नहीं जाता है. यदि जाता तो इस संसार में कोई वस्तु नहीं बचती. इसलिए किसी को धन देकर उस पर अहंकार कभी न करें. क्योंकि यह सब वस्तुएं हमारी नहीं है. सब कुद यही रह जाएगा और हम खाली हाथ यहां से चले जाएंगें. तन में पहने कपड़े, सोना चांदी सब कुछ यही आकर मिला है. विचार कीजिए कि हमारा है क्या? जिसे आप अपना कहते हैं वह सारी वस्तुएं हमारे उपयोग के लिए हैं. साथ ले जाने के लिए नहीं, किंतु उनके प्रति हम इतना मोहित हो जाते हैं कि अपनी समझने लगते हैं. समझना औरह होना दोनों में बहुत अंतर है. हम उन्हें अपना समझते हैं, वे हमारी होती नहीं हैं.

यदि संसार की वस्तु मनुष्य के मृत्यु के बाद में ले जाने की होती तो आज आपके लिए एक इंच भूमि भी नहीं बचती. मनुष्य मोह पाश में डूबकर जानबूझकर अंधा बना है. भिखारी भी अपने भाग्य का ही ले जाते हैं. साधु संतो का आहार भी हो जाता है. परिवार वाले तो अधिकार से खाते हैं. अतः आप कमाने के लिए कारण मात्र हो. कहा भी गया है कि दाने-दाने पे लिखा है, खाने वाले का नाम.

त्याग के बिना कोई भी धर्म जीवित नहीं रह सकता. धर्म तथा आत्मा को जीवित रखने के लिए त्याग नितांत जरुरी है. समस्त जड़ वस्तु का त्याग करने वाला ही मुक्ति को प्राप्त कर पाता है. ममत्व की शिलाओं को हटाने से ही शांति का झरना फूटता है. इसलिए हमें वस्तुओं का संग्रह करने की अपेक्षा, अपना ध्यान, धर्म दान में लगाना चाहिए. यही पर किया गया दान-धर्म हमें मोक्ष प्राप्ती की ओर ले जाएगा. यही हमारा प्रथम कर्त्तव्य है. इसी से हमें आध्यात्मिक सुख अी अनुभूति प्राप्त होती है. यह अक्षरशः सत्य है.

० बी-८०४, एन.जी.ओ कॉलोनी, वनस्थलीपुरम, रंगा रेड्डी-५०००७०,आ.प्र.

और मार्क्स आदि जितने उच्च्व स्तरीय दार्शनिक हुए हैं, वैसे अंग्रेजी में नहीं हुए. अशाई, शिम्बून और प्रावदा जैसे विश्व के बड़े-बड़े समाचार-पत्र भी जापानी और रूसी भाषाओं के ही तो हैं न कि अंग्रेजी के. कला, संगीत और चित्रकारी आदि विधाओं में भी फ्रांसीसी भाषा में जितना गहन एवं प्रचुर साहित्य उपलब्ध है, उसकी तुलना में अंग्रेजी साहित्य तो उसके नाखून के बराबर भी नहीं हैं. दुनिया को प्रभावित करने वाली पुस्तकें वेद, बाईबल, कुरान, धम्मपद, जिन्दावेस्ता और दास कैपीटल आदि भी तो अंग्रेजी में नहीं हैं. बिजली के आविष्कारकर्ता माईकल फैराडे ने क्या कभी कैम्ब्रिज या आक्सफोर्ड का मुंह देखा था? कालिदास, बाल्मिकी, तुलसीदास, वेदव्यास, कौटिल्य, पतंजलि, धनवन्तरी और आर्यभट्ट आदि ने भी क्या अंग्रेजी पढ़ी थी. अरस्तु, नैपोलियन, सुकरात, लेनिन और प्लेटो आदि भी क्या अंग्रेजी में ही लिखते थे?

कुछेक का यह भी मानना है कि विदेशी तथा संस्कृत शब्दों के इसमें जुड़ जाने से हिन्दी क्लिष्ट हो गई हैं. इस सन्दर्भ में मैं यही कहूंगा कि हिन्दी ने तो मात्र दस हजार विदेशी शब्दों को आत्मसात किया हुआ है जबकि अंग्रेजी और जर्मन में तो २० हजार से भी कहीं अधिक विदेशी शब्द हैं. अब जहां तक इसे संस्कृत युक्त कहने वालों की बात हैं, उनहें शायद इस बात की जानकारी नहीं है कि बंगला, मलयालम और तमिल भाषाओं में तो हिन्दी की अपेक्षा कहीं अधिक संस्कृत शब्द पाये जाते हैं. याद रहे कि अंग्रेजी तो वास्तव में विदेशी उपज हैं जबकि हिन्दी यहां की महक हैं. क्या इंग्लैड में भी वहां का सरकारी काम हिन्दी में होता है? यदि अंग्रेजी को भुला पाना संभव नहीं तो हिन्दी को भुला देना भी मुनासिब नहीं.

जब हमारा नीम का पेड़ नेपाल में और आम का पेड़ रूस में उगने से मना कर देता है तो मानव होकर भी हम फिर क्यों इस विदेशी अंग्रेजी की आरती उतारने पर तुले हुए हैं. क्या चीन के लोग फ्रेंच को अपनी भाषा मानते हैं. क्या रूसी जनता भी अंग्रेजी बोलती हैं? क्या मिस्र के लोग जर्मन समझते हैं? जरा याद करें कि क्या लेनिन ने सत्तारूढ़ होते ही एक ही झटके में रूस से फ्रांसिसी कोा खत्म नहीं कर दिया था? जब यहां से हजारों छात्रों में से एक-दो छात्र ही विदेशों में जा पाते हैं तो इस अंग्रेजी को सब पर लादने का क्या औचित्य हैं? अनेक देशों की तरह यहां के भी जरूरतमंद छात्र ८-१० माह के गहन प्रशिक्षण में अंग्रेजी सीख सकते हैं. विगत २५० वर्षो से यहां अंग्रेजी अनिवार्य कर दी जाने पर कितने वर्डस्वर्थ, कीट्स या शैली हुए? जब विदेशी भी इसे गोद लेने को उतावले हैं तो हमें भी चाहिये कि भारत मां की इस बिन्दी को हम हर प्रकार से रक्षा करें और इसे किसी भी कीमत पर न उजड़ने या मिटने दें.

० ४५/४६५/टाईप-४, सेक्टर-२, सी. जी.एस.कॉलोनी,अन्टाप हिल, मुम्बई-३७

भारत की सांस्कृतिक एकता साध्य और साधन

एस.बी.मुरकुटे
प्रचार-प्रसार सचिवः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, आनंद नगर, बड़गांव, बेलगांव-५, कर्नाटक

सागर के पानी को हाथ में उठाकर यह नहीं कहा जा सकता है कि अमुक स्थान का ही है. इसी प्रकार भारतीय संस्कृति हैं.

संस्कृति शब्द की उत्पत्ति संस्कार शब्द से हुई है. जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव अनेक संस्कारों का पालन करता है. भारत की सांस्कृतिक एकता सबसे श्रेष्ठ है. ऋषियों से लेकर आज के वैज्ञानिक, औद्योगिक और राजनीतिक युग में वह फैली हुई हैं.

सागर के पानी को हाथ में उठाकर यह नहीं कहा जा सकता है कि अमुक स्थान का ही है. इसी प्रकार भारतीय संस्कृति हैं. नाना जाति, धर्म, दर्शन, सभ्यता और संस्कृतियों का मेल समय-समय पर होता है. यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है. विविधता में एकता.

भारत आज जो कुछ है, उसकी रचना में भारतीय जनता के प्रत्येक भाग का योगदान रहा है. मनुष्य पंजाब और शिवालिक की ऊंची पद भूमि पर विकसित हुआ होगा. सिंधु की नरार में कृषि सभ्यता बनी होगी, सिन्धु के पठार में आज भी प्राचीन संस्कृति के लोक अवशेष मिलते हैं.

भारत की संस्कृति में थिग्रो आष्टिक आर्य, यूनानी, यूची, शक, आभीर, हुज, मंगोल और मुस्लिम, तुर्क और द्रविड़ों की संस्कृतियां भी हैं. परन्तु पानी का नाम नदी के नाम पर पड़ता है. उसी प्रकार संस्कृति सभ्यता और इतिहास भुगोल का नाम देश के आध ाार पर बनता है.

भारत बहुभाषी देश होते हुए भी इसकी सास्कृतिक एकता ही साध्य और साधन है. कश्मीर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से लेकर कलकत्ता सब एक सूत्र में आते हैं. आपस में व्यवहार करते हैं. यही भारत की सांस्कृतिक एकता की महत्ता हैं.

राजभाषा हिन्दी भारत की एकता और अखंडता की कड़ी है. हर एक धर्म के आदमी एक दूसरे धर्म के आदमी से मिलजुलकर एकता दिखाते हैं.

भारत का जनतंत्र दुनिया में सबसे बड़ा लोक जनतंत्र है. संसद में अलग-अलग जाति, धर्म, भाषा के लोग एकता के साथ जनतंत्र चलाते हैं. सच है भारत की सांस्कृतिक एकता साध्य और साधन हैं.

भारत की संस्कृति में मानव संरक्षण और आस्तिक भावना का समावेश है. अपना विकास दूसरों के सहयोग से ही होगा.

सम्पूर्ण भारत में वर्ष भर होने वाले प्रमुख पर्व होली, दीपावली, दशहरा, रक्षा बंधन, ईद, क्रिसमस, वैशाखी की तरह पूरी रथ यात्रा पूरे भारत में लगभग सभी नगरों में उतनी ही श्रद्धा और प्रेम के साथ मनायी जाती है. जो लोग पुरी की रथ यात्रा में शामिल नहीं हो पाते हैं, वे अपने नगर की रथयात्रा में अवश्य शामिल होते हैं. रथ यात्रा का इस महोत्सव में जो सांस्कृतिक और पौराणिक दृश्य उत्पन्न होता है, उसी तरह प्रायः सभी देशवासी सौहार्द्र, भाईचारे और एकता के परिप्रेक्ष्य में देखते है, जिस श्रद्धा और भक्ति से पुरी के मंदिर में सभी लोग बैठकर एक साथ ही जगन्नाथजी का महाप्रसाद प्राप्त करते हैं, उत्साहपूर्वक श्री जगन्नाथ का रथ खींचकर लोग अपने को धन्य मानते हैं.

उसी तरह मैसूर का दशहरा, उत्तर भारत में होली का त्योहार, ईद, क्रिसमस के त्योहार भारत के भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी, विविध जाति, धर्म के लोग अपने-'अपने ढंग से मनाते हैं. यही भारत की सांस्कृतिक एकता की कड़ी है.

एकता साध्य और साधन के आधार पर भारत की प्रगति होगी. दुनिया में हम सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त करेंगें. कभी हमारी सांस्कृतिक एकता साध्य और साधन बने तब.

विचार कीजिए

- गुस्सा-अक्ल को खा जाता है।
- अहंकार-मन को खा जाता है
- प्रायश्चित-पाप को खा जाता है
- लालच-ईमान को खा जाती है
- चिंता-आयु को खा जाती है
- रिश्वत-न्याय को खा जाती है।

-प्रभाशंकर, रंगा रेड्डी, आ.प्र.

नेता नहीं मतदाता सुधरें

■भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे आया और धीरे-धीरे इसमें जनता भी शामिल हो गयी.

■आम जनता ज्यादातर नेताओं को भ्रष्ट, अवसरवादी, जातिवादी एवं साम्प्रदायिक ही मानती है. लेकिन वह अपने गिरेबान में झांककर नहीं देख रही है कि यदि कोई सीधा -सादा, ईमानदार जनसेवक उसके बीच है तो उसे समर्थन क्यों नहीं देती है?

✍ **समाज प्रवाह,**
मुलुंड (पं.) मुंबई, महाराष्ट्र

एक दशक पूर्व तो यह सोचा जा सकता था कि साफ-सुथरी राजनीति करने का नियंत्रण नेताओं के पास था, लेकिन अब ऐसा रह नहीं गया हैं. यह सही है कि भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे आया और धीरे-धीरे इसमें जनता भी शामिल हो गयी. साधना भाव एवं सामती समाज में राजनीति एवं नौकरशाही इसलिए आकर्षक है कि यहां धन के अलावा सत्ता दोनों की प्राप्ति हो जाती है. कृषि, कला, व्यापार, शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में ये दोनों आसानी से नहीं मिलते. यही कारण है कि राजनीति आकर्षक है. किसी भी तरह से चुनाव जीतना एवं सत्ता में आने की होड़ बनी रहती है, चाहे जो भी साधन अपनाना पड़े. अब कोई साफ-सुथरे ढंग से राजनीति करना चाहे भीतो वह हासिए पर फेंक दिया जाता है. विशेषरूप से चुनावी राजनीति में यो यह हो ही गया है कि बिना शराब, पैसे, लोभ-लालच, जातीय एवं धार्मिक समीकरण आदिके इस वैतरणी को पार करना मुश्किल है. ईमानदार की सराहना जनता तो करती है लेकिन वोट नहीं देती. जंतर-मंतर पर जब अन्ना हजारे ने अनशन समाप्त किया तो कहा गया कि वे अगर चुनाव में खड़े होंगे तो उनकी जमानत जब्त हो जाएगी. बिल्कुल सही ही कहा था. इस समय हिमाचल प्रदेश, गुजरात में चुनाव होने को हैं. फिर से बहस तेज हो गयी है कि हमाम में सारे दल नंगे हैं. नेताओं का कोई दीन-ईमान नहीं है. आम जनता ज्यादातर नेताओं को भ्रष्ट, अवसरवादी, जातिवादी एवं साम्प्रदायिक ही मानती है. मजे की बात है कि वह अपने गिरेबान में झांककर नहीं देख रही है कि यदि कोई सीधा-सादा, ईमानदार एवं जनसेवक उसके बीच है तो क्या उसे समर्थन देती है? हो सकता है कि सराहना करे लेकिन यह कहते हुए नकार देते हैं कि इसका बेस वोट नहीं है अर्थात् उसकी जाति का वोट नहीं है. इसके अतिरिक्त पैसे एवं लोभ-लालच के बल पर कार्यकर्ताओं की भीड़ का अभाव और मीडिया का समर्थन न होना आदि भी ऐसे लोगों को कमजोर करता है. ऐसी भी बात नहीं है कि ईमानदार, वैचारिक एवं विकासोन्मुख लोग चुनाव में न खड़े हो रहे हो, लेकिन उपरोक्त मानसिकता की वजह से इन्हें वोट नहीं मिलता और उल्टा उपहास भी होता है. शहर का मध्यम वर्ग काफी हद तक ग्रामीण क्षेत्र की वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं. प्रति वोट एक हजार तक में खरीदे जा रहे हैं. करोड़ों रुपये इस बाबत खर्च करने के लिए ले जा रहे थे और चुनाव आयोग ने उसको पकड़ा भी है. उसमें आक्रोश तो बहुत है कि जनता जातिवादी, बाहुबली, साम्प्रदायिक, अर्द्धशिक्षित लोगों को वोट क्यों देती हैं? लेकिन क्या वे अपने गिरेबान में झांककर देखते भी हैं? सबसे कम वोट देने वाले यही होते हैं. अवसर मिले तो आर्थिक चोरी में पीछे नहीं रहते. विशेषरूप से अधिकतर व्यापारी जब भी उसे अवसर मिलता है तो आयकर, सीमा शुल्क, बिजली, मूल्य वर्धनकर आदि की हेराफेरी करने से बिल्कुल नहीं चूकता. इन्हीं के काले धन से देश की राजनीति भी चल रही है. चुनाव आयोग की थोड़ी सी सक्रियता के कारण जगह-जगह पर काला धन पकड़ा जा रहा है. यदि जनता इस धन का उपभोग शराब, वोट बेचने या और तरह के लोभ लेने से मना कर दे तो क्या मजला है कि चुनावी राजनीति में अच्छे लोग न सफल हों. आजादी से लेकर ८० के दशक तक भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे आया. जब अब नीचे आ गया है तो ऊपर से अगर कोई साफ-सफाई करना चाहे तो संभव है कि उसी का सफाया हो जाए. इस बीभत्स समस्या का समाधान अब आसान नहीं रह गया है. बाजी अब जनता के हाथ में है. कुछ लोग आदर्श की वह स्थिति पाने की सोचते हैं कि सारे दल मिलकर फैसला करें कि अपराधी या गलत लोगों को टिकट न दिया जाए या राजनीति में उनका प्रवेश रोका जाए. वह भी संभव नहीं है, क्योंकि इस प्रतियोगिता में येन-केन प्रकारेण सभी सत्ता के गलियारे में पहुंचना चाहते हैं. जब दल और उसके नेता इस काम कोनहीं कर

भाग्य के गुलाम व्यक्ति को नहीं मिलता लक्ष्य

-प्रभाशंकर
रंगा रेड्डी, आन्ध्र प्रदेश

संसार में जो व्यक्ति भाग्य का गुलाम बन जाता है वह जीवन में कुछ नहीं कर पाता और जो बिना किसी चिंता के मेहनत व लगन से कर्म में लगा रहता है वह व्यक्ति अपना लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त कर लेता है. इसलिए मनुष्य को भाग्य से नहीं बल्कि कर्मो के अनुसार ही ही योनि, संतान, सुख आदि की प्राप्ति होती है. यदि मनुष्य अच्छे कर्म करता है तो उसका फल उसे अच्छा ही मिलता है और यदि बुरे कर्म करता है तो फल भी बुरा ही मिलता है. अधिकतर मनुष्य दुःखों के लिए भाग्य को कोसते रहते हैं किन्तु वे नहीं समझते है कि यह सब उनके द्वारा किये गए कर्मो का ही फल हैं.

मनुष्य को कभी भी भाग्य के सहारे न रहकर अपने कर्म में ध्यान लगाना चाहिए, क्योंकि जीवन में जो कुछ भी मिलता है, वह भाग्य से नहीं अपितु कर्मो के अनुसार ही मिलता है. गतिशीलता ही जीवन का नियम है और हमें लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गतिशील ही बनना पड़ता है. जड़ और चेतन मन का यही फर्क है कि जड़ जीवन में कुछ नहीं कर पाता और चेतन मन अवश्य ही सफलता प्राप्त करता है. नदिया चलती रहती हैं, झरने बहते हैं, पक्षी उड़ते हैं. यहां तक कि एक छोटी सी तितली, चींटी और मधुमक्खी तक गतिशील रहती हैं.

एक मधुमक्खी दिन रात मेहनत करके मधु इक्ट्ठा करती है और दूसरों के लिए मिठास देती है इसलिए मनुष्य को भी कर्म करते हुए जीवन में आगे बढ़ना चाहिए. मनुष्य प्रकृति की सबसे सुंदर कृति है. मनुष्य में सोचने समझने की शक्ति सभी प्राणियों से अधिक होती है इसलिए मनुष्य को जीवन में गतिशील रहते हुए जीवन को सार्थक बनाना चाहिए तभी मानव जीवन का उद्देश्य सफल होगा.

मनुष्य को समय रहते यह सारी बातें कर लेनी चाहिए, वरना कभी-कभी बहुत देर हो जाती है और फिर इसके बाद करने के लिए कुछ खास बचता भी नहीं है. अपने जीवन में क्या चाहिए, क्या प्राप्त करना है और किस तरह भगवान को रिझाना है, कैसे उनकी भक्ति करनी है यह सब मनुष्य को समय रहते कर लेना चाहिए और उसमें लग जाना चाहिए. इसमें भाग्य के सहारे नहीं रहा जा सकता. भाग्य को कोसने से उसे उसका लक्ष्य कभी प्राप्त नहीं हो सकता.

दूर खिसकती रोटी

प्याज रुलाए, आंसू लाए, बना रसोई पर भारी।/लहसुन तो सिर चढ़कर बैठा, बनी खरीद लाचारी।।
बनी खरीद लाचारी, सीधे जेब कट रही।
आम आदमी बौराया, सब्जी थाली से हट रही।।
कहे प्रभात साफ, सरकार की नियत खोटी।
दूर खिसकती जा रही, आम आदमी से रोटी।।

सकते हैं तो एक ही विकल्प बचा रह गया कि बड़े स्तर पर जन आन्दोलन चलाया जाए ताकि कोई नई दिशा मिले. समाज में जब जाति है तो राजनीति में जाएगी ही. टीम अन्ना से भी कहा गया है कि उसका आन्दोलन पूर्ण सफल नहीं होगा जब तक कि देश के सामाजिक संरचना की सही समझ नहीं है और वह बात अब सही हो रही है. दस साल पहले जब कहा जाता था कि जनता भी भ्रष्ट और लोभी हो गयी है तो शहरी बुद्धिजीवी और विशेष तौर से वामपंथी इस विचार से बिल्कुल सहमत नहीं हुआ करते थे लेकिन अब वे भी समझने लगे हैं. जन लोकपाल में भी उद्योगपतियों के द्वारा किए गए भ्रष्टाचार के खिलाफ बात को नहीं शामिल किया गया है. उद्योग जगत के भ्रष्टाचार को जब तक नहीं रोका जाता तब तक राजनीति और नौकरशाही के क्षेत्र में नियंत्रण पाना मुश्किल है. वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था से आम जनता निराश है. दर्द जिसे है दवा उसी को लेना पड़ेगा. जिस व्यवस्था से राजनेताओं को लाभ है, वे क्यों चाहेंगे कि उसमें बदलाव हो.

आवश्यक सूचना

विश्व स्नेह समाज के १२वर्ष पूरे करने पर सदस्यों के लिए विशेष योजना

०१ अक्टूबर २०१२ से मार्च २०१३ तक वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पूणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति मुफ्त प्रेषित की जाएगी.

इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें

नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

मूल्यः 50/रुपये मात्र

दक्खिनी हिन्दी काव्य-रूप

■अमीर खुसरों के साहित्य का विकास दक्षिण के प्रदेशों में हुआ था.

■सूफी संत ख्वाज़ा बंदेनवाज गुलबर्गा की सूफी रचना को दक्खिनी की आरंभिक रचना माना जाता है.

■इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय के दरबारी कवि अब्दुल से उनकी भाषा के बारें में पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया- 'जबां हिंदवी और हूं दहेलवी' अब न जानूं अरब हौर अजम मस्नबी।

✍ डॉ० वि.रा.देवगिरी,
सह-सम्पादकः भाषा-पीयूष, कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति, जयनगर, बेगलूर-560011

हमें गर्व है कि हिन्दी का पूर्व रूप है-दक्खिनी जिसका विकास दक्षिण के मुस्लिम सुल्तानों के राज्यों में 13वीं से १८वीं शती में हुआ था. अमीरखुसरों की साहित्य का विकास भी उत्तर में नहीं दक्षिण के प्रदेशों में दक्खिनी के रूप में हुआ था. खड़ी बोली को ऊंगली पकड़कर चलना सिखाने वाले दक्षिण के ही रचनाकार हैं. उत्तर दक्षिण को जोड़ने वाली सेतु 'दक्खिनी हिंदी' हैं. किंतु अल्लाउद्दीन खिलज़ी के देवगिरी पर आक्रमण के बाद 1327 में जब मुहम्द तुगलक ने दौलताबाद को राजधानी बनाया तो दिल्ली के लोगों को दौलताबाद बसने का आदेश दिया गया. उत्तर के सैनिक, व्यापारी और अनेक विविध पेशे वाले वहां बस गये. वहां पर दक्खिनी भाषा में व्यवहृत हो गये.

सूफी संत ख्वाज़ा बंदेनवाज गुलबर्गा पहुंचे. उनकी सूफी रचना को दक्खिनी की आरंभिक रचना माना जाता है. समय समय पर स्थास्थल पर इस भाषा को हिंदवी, हिन्दी, गुजराती और दक्खिनी कहा गया. दक्खिनी भाषा पर मराठी, कन्नड़, तेलगु, गुजराती, राजस्थानी, अरबी, फारसी का भी प्रभाव पड़ा.

बहमनी, कुतुबशाही, आदिलशाही और निजामशाही काल में दक्खिनी में सैकड़ो ने रचना की. इस काल में मुल्ला बजही का सबरस और इब्राहिम आदिलशाही का नवरस आदि रचनाएं लिखी गयी. उत्तर के कतिपय प्रेमख्यानक काव्यों की रचना दक्खिनी हिन्दी में की गयी. हज़रत बन्दा नवाज़ गेसू दराज़ (1322—1423) को अपने सैकड़ो शिष्यों के साथ 80 वर्ष की वृद्धावस्था में गुलबर्गा की यात्रा करनी पड़ी. मीरजी शम्सुल-उश्शाक (1416—1562) अपने ग्रंथ 'शहादतुल-हकीकत' में इस वास्तविकता का उल्लेख करते हुए कहते हैं-

वे अरबी बोल ना जाने ना फ़ारसी पिछाने
यह उनको बचन हीत, सुन्नत बुझे रीत।

इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय को अपने दरबारी कवि अब्दुल से, जो उनकी प्रशस्ति और प्रशंसों में इब्राहिम नामा (1604) नामक ग्रंथ की रचना कर रहा था, पूछना पड़ा कि वह किस भाषा में यह ग्रंथ लिख रहे हैं, तो अब्दुल उत्तर देता है-

'जबां हिंदवी और हूं दहेलवी' अब न जानूं अरब हौर अजम मस्नबी।

(मैं दिल्ली का रहने वाला और हूं. मैं अरबी फ़ारसी मस्नवी नहीं जानता.) दक्खिनी के कुछ कवियों ने हिन्दी छन्दों, उपमाओं, उतोक्षाओं जैसे विविध अलंकारों का अपने काव्य में प्रयोग किया है. यूसुफ़ जुलेखा में अहमद गुजराती स्वीकार करते हैं- 'सौ कीता इब्तदा हिंदी जबां सूं
बहु-छन्द बन्द उपम सन-आत सूं।
अरब अल्फ़ाज़ इसमें कम मिलाऊँ।
ना अरबी फ़ारसी बहुतेक लाऊँ।

जहां तक दक्खिनी काव्य का संबंध है, दक्खिनी के कई प्रांरभिक कवियों ने मस्नवी, कसीदा, रूबाई, ग़ज़ल और मुस्ताज़ाद आदि काव्य रूपों के साथ-साथ दोहे भी लिखे थे. शाहमीरान जी शम्सूल अश्शाक ने अपनी रचना खुशनाम में दोहा का प्रयोग किया है, जिनकी संख्या 117 के लगभग है. कवि स्पष्ट उल्लेख करते हैं कि उनकी काव्य रचना का उद्देश्य लोगों को खुश रखना है-

खुश खुश हाल खुश खुशियां खुशी रहे भरपुर
वह खुब खुशियां अल्लाह करो अनवरूल अली नूर।

उनका एक अन्य दोहा है-

पीर वही जो प्रेम लगावे, नूर निशानी ऐन,
मंजिल की सूद दावे, जहां दीस न रेन।

मीरान जी ने भी, नामदेव और अन्य कवियों की भांति भारतीय काव्य-रूपों को अपनाया था.

मुल्ला वजही ने भी अपनी प्रसिद्ध गद्य-रचना 'सबरस' में भी कुछ दोहों और बैंतों का प्रयोग किया है. उनका एक दोहा प्रस्तुत है-

सात सहेली एक पिच, चहु घर पिव होय
जिस पर पिव का प्यार है, सो धन विरले कोय।

अमानुल्लाह ने अपनी रचना गंजीने-सौहदा में अपने अनेक दोहों में दकनी साहित्य को समृद्ध किया है देखिए-

में हूं अरबिस्तान में, अरब नहीं मुज बीच
मैं नहीं हिन्दुस्तान में, हिंदी मेरे बीच।

दक्खिनी कवियों ने दोहरों की

सरकारी नियमों की धज्जियां उड़ा रही है दवा कंपनियां

सरकार द्वारा सस्ती दवाइयां बेचने के दावों को ठेंगा दिखाते हुए दवा कंपनियां मनमाने तरीके से दवाईयों की एम.आर.पी. तय कर रही हैं. राष्ट्रीय औषध मूल्य निर्धारण प्राधिकरण द्वारा दवाइयों की कंट्रोल मूल्य से ज्यादा धड़ल्ले से बेची जा रही हैं.

एनपीपीए द्वारा 31 मार्च 2011 को जारी 'कंपेडियन ऑफ द प्राइस सिड्यूल्ड ड्रग' के सातवें एडिशन के अनुसार सिप्रोफ्लाक्सासिन 500 मिग्रा. के चार टेबलेट की स्ट्रीप को सिपला, रैनबैक्सी और जाइडस कैडिला जैसी कंपनिया गजट संख्या 438(ई) के अनुसार नोटिफिकेशन संख्या 10.06. 1997 के तहत 24.2 रुपये में बेच सकती है. वही दूसरी ओर एफ.डी.सी अलकेम और माइक्रो इसी नोटिफिकेशन के तहत प्रति चार टैबलेट 23.92 रुपये में बेच सकती हैं, इसके उलट मुम्बई की एक रिटेल दुकान पर जब इन कंपनियों की दवाइयों का रेट मालुम किया गया तो पता चला कि रैनबेक्सी सिफरान 500मिग्रा. नामक ब्रांउ से 99.50 रुपये प्रति 10 टेबलेट बेच रही हैं तो सिपला सिपलॉक्स 500 के नाम से 93.96 रुपये प्रति टेबलेट बेच रही हैं. आश्चर्यजनक तरीके से ज्यादा पैसा वसूला जा रहा है तो आप हमें शिकायत कर सकते हैं. इसके लिए (http://nppaindia.nic.in) पर फार्म उपलब्ध है.

दवाइयों में मुनाफाखोरी खत्म करने के लिए 'कंट्रोल एम.आर.पी.' अभियान चलाने वाली संस्था प्रतिभा जननी सेवा संस्थान का कहना है कि भारत एक लोककल्याणकारी राज्य है अतः सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि वह सस्ती दवाईयां उपलब्ध कराएं.

(लेखक प्रतिभा जननी सेवा संस्थान के नेशनल कोआर्डिनेटर वयुवा पत्रकार है., पंश्चिम बंगाल)

रचना भी की है. दोहरा कोई नया और स्वतंत्र छन्द नहीं है. दोहरा गुजराती साहित्य में बहुत ही लोकप्रिय छन्द है.

इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय (1570–1636) ने अपनी संगीत प्रधान कृति 'नवरस' में सुन्दर ललित गीतों के साथ-साथ 18 दोहरों की भी रचना की है. देखिये-

दिन जोत-पति सो तुज सारे र
सारे कारे चांद हुए, नहीं जोत तुज कार रे।'

ये स्वतंत्र वर्णिक छन्द की श्रेणी में आते हैं. इन्हें घनाक्षरी अथवा 'मन हरण' छन्द भी कहते हैं. यह रीतिकाल का एक लोकप्रिय छन्द है, जो समवर्ण होता है. इसके प्रत्येक चरण में सामान्यतया 31 वर्ण होते हैं. अंतिम वर्ण गुरू होता है. प्रायः आठवें, सोलहवें, चौबीसवें पर यति होती है. चरण का अन्त प्रायः तुकान्त होता है.

दक्खिनी में अली आदिल शाह शाही (1656–1682) ने अनेक सुन्दर कविता लिखे हैं. देखिए-

प्यारे दू निरख प्यारी सखी सत बोल
उठे देखन मदनरूप कामकी खटोटी है।
भोज राम सम नहीं बाहिके समज आगे
सरवण को ऐसे लागे कवि की कसौटी है।

एक सुन्दर कवत्त दृष्टव्य है-

राग में रंग में आखर प्रसंग में
जाकी मति नित सनी रहत सूबास में।
सविता सुमती करी दान औ किरपान जाकी
कीरति विदित भूमी भूतल, आकाश में।

गीतः प्रायः सभी भाषाओं में कवियों ने गील लिखे हैं. दक्खिनी के कवियों में कूली कुतुबशाह, इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय और अली आदिलशाह के सुन्दर गीत उपलब्ध है. इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय तो साहित्य, कला और संगीत के सच्चे उपासक थे. उन्होंने संगीतज्ञों को अपने दरबार में पूरा संरक्षण दिया था. उनकी कालजयी रचना सबरस तो विभिन्न राग-रागिनियों पर आधारित संगीत और काव्य की अद्भुत श्रेष्ठ रचना है. इसमें 59 गीत और 17 संग्रहीन राग है. अपने एक गीत में वह बाग्देवी सरस्वती की आराधना इन शब्दों में करते हैं-

गनपति मूरस हस्त मेघमद बरखत पानी
दंत दामिनी घंट घोर मुंडान भाललाविधु वानी
सरसुति पुत्र स्वत घनजल कैसे जी जानी।

संत एकनाथ ने भी अपने समकालीन दक्खिनी कवियों के सदृश भक्ति रस के अनेक गीत लिखे हैं-

अल्ला राखे वैसा भी रहना
मौला राखे वैसा भी रहना
कोई दिन सिर घड़ा चढ़ावे
कोई दिल अल्ला मंगता गाये।

शाह तुराब के भक्ति गीत, जो उन्होंने अपनी काव्य कृति मन समझावन में संग्रहीत किए हैं, दक्खिनी संस्कृति और सौहार्द के प्रतीक है-

जिसे देव कहते सो हर घट में है रे।
नहीं कैद होकर वह मठ में है रे
नज़रसूं नजर करके घूंघअ में है रे
गुरू बिन यू मारग सा तो खट खट में है रे।

जहां तक राग और रागनियों का संबंध है, दक्खिनी के कवियों ने अपने विभिन्न गीतों में इनका प्रयोग किया है.

बहू और बेटी के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण क्यों? कभी आपने सोचा

दाउजी

कहानी

पुनरावृत्ति

✍डॉ०अनीता पंडा

शिक्षा-एम.ए.(भूगोल,हिन्दी) स्वर्ण पदक, बी.एड., पी.एच.डी-हिन्दी

सम्प्रति-हिन्दी शिक्षण, कलाकार-आकाशवाणी

संपर्क-द्वारा श्री बी.के.पंडा, निदेशक, अर्बन अफेयर्स, रायतांग बिल्डिग, शिलांगा-७९३००१, मेघालय

आकाश के विस्तार को नापती-सी सीमा की आंखे कहीं कुछ ढूँढ़ रही थीं. बीच-बीच में सफेद बादलों के टुकड़ो को अगर जोड़ दें, तो शायद वह आकाश के कुछ अंश को ढँक लेगा. पर क्या कोई आकाश के विस्तार को ढँक सका है? सीमा की ज़िन्दगी भी टुकड़े-टुकड़े होते हुए क्षणों को जोड़ने की कोशिश है, जो मौका पाते ही बिखर जाती है.

ज़िन्दगी में कुछ करने की अभिलाषा ने उसमें एक जिजीविषा उत्पन्नकी, नहीं करती तो जीवन का सारा क्षण ही मानों मुट्ठी में भरी रेत के समान फिसल जाता. जीवन को साधारण ढंग से जीने की चाह में हम अपना जीवन इतना काम्पलीकेटेड कैसे बना लेते हैं. ऐसे में सिवाय छटपटाहट के क्या बचता है?

सीमा! और सीमा! सहसा दूर से आती आवाज ने उसकी विचारों की श्रृंखला को तोड़ दिया. 'अरे! यह तो अजय की आवाज है. कितनी जल्दी आ गया.'

'तुम हमेशा न जाने कहां खो जाती हो? कितनी बार कहा कि अकेले बैठ कर सोचने से अच्छा है कि कहीं घूमने चली जाया करो. किताबें पढ़ो.'

'हां, शायद यही ठीक होगा.' मन ही मन सीमा सोचती-'जिसके जीवन में एक गहरी रिक्तता हो, खालीपन हो, उसे कोई नहीं भर सकता, तुम भी नहीं अजय.' 'अच्छा, क्या चाय पियोगे?'

'हाँ, यह अच्छा रहेगा, साथ ही कुछ बातें भी हो जाएंगी मेरे व्यक्तिगत-जीवन से हटकर.'

'जैसी तुम्हारी इच्छा. वैसे अतीत को भुला देना ही अच्छा होता है.' चाय का प्याला सुड़कते हुए अजय ने कहा. चाय के सुड़कने की आवाज से सीमा का मन न जाने कैसा हो गया. महेश उसके पति को भी ऐसी ही आदत थी. और अनजाने ही वह कह उठती थी कि 'महेश चाय धीरे-धीरे पिओ, इतनी जल्दी क्या है?' बस घंटों की टकरार शुरू. अन्त में सीमा को ही माफी मांगनी पड़ती.

महेश को बाहरी और भीतरी व्यक्तित्व कितना भिन्न है. दिन भर शिष्टता का नकाब ओढ़े लोगों को अपनी बातों से लुभाने वाला घर आते ही मानों अपने असली रूप में आ जाता. ऐसा क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर सीमा आज तक नहीं ढूँढ पायी. कितनी कोशिश करती, पर परिणाम असफलता.

सुशिक्षित, आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी सीमा के गुणों पर मुग्ध होकर महेश ने विवाह-प्रस्ताव रखा तो उसकी खुशी की सीमा नहीं रही. उसे लगा कि महेश जैसे व्यक्ति के साथ उसका जीवन धन्य हो जाएगा. वह आम भारतीय पति से अलग होगा. उसकी भावनाओं को पूरी तरह समझ सकेगा. काश, इन्सान काल्पनिक दुनिया में जी सकता, तो यह दुनिया कितना खुशनुमा होती. पर यथार्थ के कठोर धरातल पर प्रायः कल्पनाओं के कोमल पुष्प बिखर ही जाया करते हैं. स्त्रियां तो भावनाओं और संवेदनाओं को महत्व देती हैं जबकि पुरुष के लिए भावनाओं और संवेदना से ज्यादा आकर्षक शारीरिक सौन्दर्य है. शारीरिक आवेगों का समयानुसार ठंडा पड़ना स्वाभाविक ही है. यही कारण है आज महेश से अलग होने के बाद भी सीमा भावना और संवेदना के महीन धागे को नहीं तोड़ पायी है.

'सीमा, तुम्हारी चाय कब की ठंडी हो

'तुम्हें अगर देर हो रही है, तो तुम जाओ.'

'क्या तुम चाहती हो कि मैं यहां से चला जाऊँ?'

'तुम औरतों को यही प्राब्लम है, हर रिश्ते को शाश्वत मान बैठती है. जब तुम महेश के साथ नहीं हो, तो क्यों उसके बारे में सोचती हो.' 'अजय तुम इस बात को नहीं समझ सकते.'

'अच्छा बताओ, महेश के साथ तुम्हारा तलाक हो चुका है?' 'मैं इसका जवाब नहीं देना चाहती.' 'क्यों? क्यों नहीं देना चाहती?'

'बस यूं ही.'

अजय के जाने के बाद सीमा ने एक लम्बी सांस ली. गहराती शाम जैसे उसे यादों के साए में समेट लेना चाहती है. न जाने उसकी प्यारी बेटी सुरभि कैसी होगी. अगर रिश्ते कांच की तरह टूट जाते तो कितना अच्छा होता. सुरभि के सुनहरे भविष्य के लिए वह इतने वर्षों महेश के साथ शारीरिक बन्धनों से जुड़ी रही, वरना मन का बन्धन तो कब का टूट चुका था.

उसे पता नहीं था कि उसका रूप और गुण महेश में हीन भावना पैदा

कर देगा, वह उसके हर कार्य में कोई न कोई खोट देखता. उसकी साहित्यिक रूचियां महेश की आंखों में चुभती-सी नजर आतीं. सीमा धीरे-धीरे अपने दायरे में सीमित घर-गृहस्थी में लगी रहती. कभी-कभी समय निकाल कर वह चुपचाप किताबें पढ़ती. जिस महेश को सीमा की साहित्यिक रुचियों पर गर्व था अब वह उससे खाना अच्छा न बनाने पर ढेरो दोषारोपण करता. सीमा का अतिक्रमण कर ये दोषारोपण गाली-गलौज पर उतर जाता. सीमा से लेकर सीमा के मां-बाप तक दोषी ठहराए जाते. डबडबायी आंखों को लिए सीमा को ही माफी मांगनी पड़ती.

समझाने की बहुत कोशिश की उसने, पर बात और बिगड़ जाती. क्या बिगाड़ा था सीमा ने किसी का, वह कभी महत्वाकांक्षी थी, पर उसने अपनी महत्वाकांक्षा को अपनी बेटी के भविष्य के लिए तिलांजलि दे दी. पर क्या वह अपनी टूटी गृहस्थी जोड़ पाई थी? ऑफिस के नैराश्यपूर्ण वातावरण से त्रस्त हो महेश घर पर आते तो मानो घर में सन्नाटा-सा छा जाता. उस गहराती रात के साथ नशा का गहरा होना, उन्हें मानसिक तनाव से मुक्ति-सा प्रदान करता प्रतीत होता, पर वहां से शुरू होती सीमा की मानसिक प्रताड़ना. भयभीत हिरण शावक की भांति सिर्फ ईश्वर से प्रार्थना करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं बचता. मानसिक प्रताड़ना के साथ-साथ शारीरिक प्रताड़ना का दर्द तो दोहरा होता है. इस प्रकार वर्षो बीत गये. 'कब तक यूं ही जीवन चलता रहेगा.' यह प्रश्न उसे अक्सर बेचैन बना डालता.'

'इतने साल हो गये शादी के, तुमने तो मेरा जीवन ही नर्क बना डाला.' 'यही बनाया है खाना.' एक जोरदार कड़कती आवाज से उसे अन्तर तक कंपा-सा दिया.' 'क्या खाओगे, मैं वहीं बना दूंगी.'

'कोई जरूरत नहीं, तुम्हारी जैसी औरत अगर मेरी ज़िन्दगी में हो तो मुझे सुख मिल ही नहीं सकता.'

सीमा-'मैंने क्या किया है?' 'तुमने कुछ नहीं किया है, तुम अगर मेरी ज़िन्दगी और इस घर से निकल जाओ तो मैं चैन की सांस लूंगा.' महेश यह वाक्य शादी के बीस सालों में कई बार बोल चुका था पर आज न जाने क्यों सीमा का सब्र का बांध ा टूट गया. उसने न जाने क्यों एक चुप्पी साध ली. यह देख महेश ने ध ामकी देते हुए कहा-'याद रखो, तुम यहां से अकेले ही जाओगी, सुरभि को तुम नहीं ले जा सकती.'

मां होकर बेटी से अलग होना क्या कम पीड़ादायक होता है, यह तो एक माँ का हृदय ही जानता है. साथ ही उसे यह पता था कि महेश सुरभि से बहुत प्यार करते थे. आँखों में आंसू भरकर सुरभि कह रही थी-'मम्मी, आपके बिना मैं कैसे रहूंगी, पर आपके जाने के बाद पापा की देखभाल कौन करेगा. पर मम्म मुझसे आपका दुःख देखा नहीं जाता. अगर आपको कहीं शान्ति मिलती है तो आप चली जाइए, शायद आपके जाने के बाद पापा कुछ बदल जाएं.' 'सुरभि! बेटा एक बार मैं इस घर से चली गई तो वापिस नहीं आऊँगी.' सुरभि-'मुझसे मिलने के लिए भी नहीं मां.' 'नहीं बेटा, अगर तुम्हारा मन करे तो आ जाना अब और अपने मन को मोह के बन्धन में नहीं बांधूगीं.'

अक्सर सीमा के जीवन में गहराते आकाश के बीच सफेद बादलरूपी स्मृतियां छा जाती है, जिन्हें वह हटा देना चाहती है. अपने कार्य में व्यस्त कभी-कभी खालीपन के बीच एक सन्तुष्टि का एहसास होता कि वह व्यर्थ ही नहीं जी रही. जबकि लोगों के व्यंग्य का सामना करना पड़ता. अक्सर घर-बाहर वालों से सुनना पड़ता कि-तुमने अच्छा नहीं किया, जो घर छोड़कर आ गई. शादी के बीस साल तो बीत ही गए थे, कुछ साल और धैर्य के साथ बिता लेती तो क्या बिगड़ जाता. इतनी बड़ी बेटी छोड़ दी. कैसी पत्थर दिल मां है? वगैरह, वगैरह...

न जाने कैसे, अजय के साथ आत्मीयता-सी हो गई. उन्मुक्त हो देश की समस्याओं और साहित्य पर चर्चा वह अजय के साथ करती. कितना प्रौढ़ विचारों वाला व्यक्तित्व था. वह स्वयं भी तो प्रौढ़ा हो चली थी. बालों में चमकती सफेदी इसके साक्षात् प्रमाण थे.

'सीमा! सीमा!' मां की आवाज ने उसे वर्तमान में लाकर पटक-सा दिया. वैसे अजय एक अच्छा व्यक्ति है. 'हां! हां! तो?'

'तू कब तक पहाड़-सा जीवन अकेली काटेगी? कुछ अपने भविष्य के बारे में सोचा है?' मां के ये शब्द मानो उसे उद्वेलित-सा कर गये. यही बात तो उन्होंने महेश के लिए भी कही थी. घंटो साहित्य की चर्चा करना, दर्शन की बातें करना महेश को अत्यन्त ही प्रिय था. क्यों होता है ऐसा मेरे साथ ही? सीमा शादी के बीस सालों में इस प्रश्न को बार-बार अपने आपसे पूछती आई थी और आज भी वह प्रश्न उसके सामने पुनः आ खड़ा है. अजय के रूप में. पर आज उसे अपना उत्तर मिल गया है कि अब मेरे साथ ऐसा नहीं होगा क्योंकि बीते हुए समय की पुनरावृत्ति नहीं होती. वह गहराते आकाश में एक उन्मुक्त पक्षी की भांति उड़ान भरेगी. अब तो उसे सफेद बादलों के पैबन्द भी आकाश में दिखाई नहीं देते.

राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए मुंशी प्रेमचन्द्र का योगदान

-डॉ० पांडुरंग पराते
747, नया सुभेदार नगर, नागपुर- 440024, महाराष्ट्र

अपने समय की जीवनानुभूतियों को उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से संसार के सामने प्रस्तुत किया. उनके विचारों की व्यापकता, गहराई और तत्वान्वेषणीय प्रकृति के कारण ही उन्हें इतनी लोकप्रियता प्राप्त हुई.

वे पूरी निष्ठा भावना के साथ मानव और मानव के बीच की खाई पार कर एक समतावादी जीवन पद्धति के पोषक रहे. उनकी कृतियां चाहे कथाएं, कहानियां, उपन्यास, या लेख हों सर्वत्र ही इतनी सन्तुलित और सुगम भाषा का प्रयोग उस काल के अन्य रचनाकारों में कदाचित वैसा विकसित नहीं हो सका है जैसा कि मुंशीप्रेमचंद की कृतियों में हैं.

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित किए जाने सम्बंधी विचार मुंशी प्रेमचन्द्र के समय में परिपक्व हो चुका था. राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्वरुप के सम्बंध में उन्होंने भी अपनी मान्यताएं स्थिर रखी. उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा के तीन तत्व है-सरलता, सुन्दरता और बोधगम्य शैली. किसी भी जीवित भाषा में इन गुणों की अनिवार्यता स्वयंसिद्ध है. इस विषय में एक स्थल पर उन्होंने कहा भी है-'जीवित भाषा तो जीवित देह की तरह बनती रहती है. भाषा सुन्दरी को कोठरी में बन्द करके आप उसका सतीत्व तो बचा सकते हैं, लेकिन स्वास्थ्य का मूल्य देकर उसकी आत्मा इतनी बलवान बनाइए कि वह अपने सतीत्व और स्वास्थ्य दोनों की रक्षा कर सके. बेशक हमें ग्रामीण शब्दों को दूर रखना होगा जो किसी खास इलाके में बोले जाते हैं. हमारा आदर्श तो यह होना चाहिए कि हमारी भाषा अधिक से अधिक आदमी समझ सकें. अगर इस आदर्श को हम अपने सामने रखें तो लिखते समय भी हम शब्द चातुरी के मोह में न पड़ेगें.' अतः स्पष्ट है कि शब्द चातुरी से उनका आशय था हिन्दी भाषा के सरल और बोधगम्य रूप का.

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के शब्द कोष की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि के समर्थक थे और इसलिए संस्कृत, अरबी-फारसी के सर्व प्रचलित शब्दों का न केवल उन्होंने अपनी रचनाओं में खुलकर प्रयोग किया वरन जीवन पर्यन्त उस भाषा का ही समर्थन किया जिसे हम पूर्व काल से 'आम-फहम' की भाषा कहते आ रहे थे. जहां भाषा सम्बंधी विचार भूमि का प्रश्न उठता है तो मुंशी प्रेमचन्द्र ने हिन्दी के सर्वग्राह्य रूप को ही आदर्श माना है.

आधुनिक हिन्दी गद्य की मुहावरेदार भाषा शैली के लिए जिस रूप को मुंशी प्रेमचन्द्र ने अपनाया था. वह गांधीजी के अहसयोग आन्दोलन के निकट था, बारीकी में देखने पर भाषा के उस प्रचारित हिन्दुस्तानी रूप से वे बहुत दूर थे. गांधीजी के अनेक भक्तगण देव नागरी में लिखित हिन्दी के उर्दू रूप को ही परिपोषित करना चाहते थे. मुंशी प्रेमचन्द्र ने अपनी भाषा को 'हिन्दुस्तानी' या राष्ट्रभाषा ही माना है, लेकिन बोलचाल की भाषा हिन्दी ही थी.

पंडित शांतिप्रिय द्विवेदी ने मुंशी प्रेमचन्द्र की भाषा शैली की चर्चा करते हुए लिखा है-'उन्होंने हिन्दी को संस्कृति जन्य स्निग्धता दे दी है. यों कहें कि उर्दू के मुख पर हिन्दी का आलेप करके उन्होंने भाषा को एक नवीन शोभा दे दी है.' मुंशी प्रेमचन्द्र ही यही लोकप्रिय भाषा शैली गबन और गोदान जैसी कृतियों में पल्लवित हुई. भाषा का यही मानक रूप निश्चय ही सर्वप्रिय और सर्वग्राह्य भी है.

भारतीय गांवो की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक हालातों की मूल चेतना आज के जीवन संघर्ष से रहित नहीं हैं. ठीक उसी तरह राष्ट्रभाषा हिन्दी की स्थिति हो रही है. वर्तमान में फिर अंग्रेजी भारतीयों के दिलो दिमाग में छा रही है. आज विदेशों में हिन्दी सिखने वालों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, परन्तु वही दूसरी तरफ भारत देश में हिन्दी को देश की राजभाषा और उसकी लिपि के रूप में देवनागरी को स्वीकृति मिल चुकी है, परन्तु खेद की बात यह है कि संविधान की इस व्यवस्था के क्रियान्वयन पक्ष पर विशेष रूप से ध्यान नहीं दिया गया. राष्ट्रभाषा हिन्दी को एक सूत्र में बांधने के राष्ट्रीय रचनात्मक कार्य में मुंशी प्रेमचन्द्र सदैव अग्रणी रहे. यही उनका राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए योगदान है.

स्वराज के 65वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी वर्तमान में देश के सामने राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रश्न उतना ही महत्ता के साथ प्रस्तुत है, जितना कि मुंशी प्रेमचन्द्र के पूर्ववर्ती युग में था. अधिक सार्थक तो यह होता कि भाषा के सन्दर्भ में हम मुंशी प्रेमचन्द्र की लोकहितवादी प्रवृत्ति की अनुकूलता का व्यापक प्रचार-प्रसार कर पाते और देश के जन जीवन की अनुप्राणित करने की क्षमता युक्त राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्वरूप निखर पाता. राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्थान ऊंचा करने के लि आज भी मुंशी प्रेमचन्द्र की हिन्दी प्रासंगिक है.

जय हिन्दी, जय भारत!

हमारी शिक्षा कब तक अपूर्ण रहेगी?

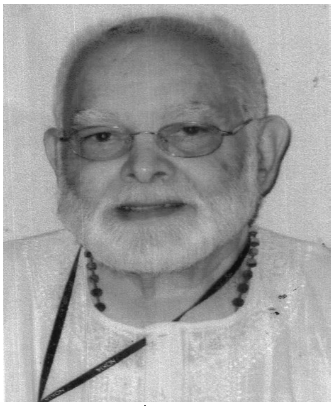

राजन चौधरी पत्रकार
सूर्य सदन, सी-२, शान्ति शिखर, राजभवन मार्ग, सोमाजीगुडा, हैदराबाद-८२, आन्ध्र प्रदेश

'वेद क्या है?' वेद विधाओं के भंडार है.' वेद विधाये दो प्रकार की बताई गई है- अपरविधायें और पराविधायें. यदि कोई व्यक्ति साक्षर होकर, पुस्तकीय अध्ययन करके अपने को ज्ञानी मानने लगे-मनन-विश्लेषण-गुणन आचरण-तप-साधना द्वारा अपनी बुद्धि को विवेक-प्रतिभा-मेधा आदि बुद्धियों में विकसित न कर सके यानि कि अपरा विधाओं की प्राप्ति में ही लगा रहे तो उसे अपूर्ण शिक्षित ही कहा जायेगा. रावण के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ. उसने जिन अपरा विधाओं-सिद्धियों को प्राप्त किया उनसे उसकी प्रज्ञा और ऋतंभरा बुद्धि विकसित न हो सकी. वह पराविधाओं को प्राप्त न कर सका. उसका विकास अधूरा रहा.

रावण का शरीर जितना हृष्ट-पुष्ट, भीमकाय था उतनी ही उसमें अहंकार, लोभ-क्रोध, छल कपट आदि तमोगुणों की मात्रा भी अधिक थी. सद्गुणों के बजाय उग्रता, ईर्ष्या, निर्दयता, संकीर्णता-कुटीलता आदि उसके चरित्र में अधिक विकसित हो गई थी. इन दुष्प्रवृत्तियों ने उसे अधार्मिक बना दिया था.

रावण को दशानन भी कहा जाता है किंतु यह बात गले नहीं उतरती. उसके बाल्यकाल में हुई घटना अधिक तर्क संगत लगती है. हुआ यों था कि रावण ने अपनी धाक जमाने के लिए राजधानी के एक श्रीमंत को पछाड़कर उस के गले का नौलखा हार उतारकर स्वयं पहन लिया था. मदमस्त होकर जब वह अपने महल में लौटा तो उसके गले में नौ हीरो के हार में उसके चेहरे के प्रतिबिंबों को देखकर उसकी माता के मुख से बरबस ही निकल गया था 'पूत्र तू तो दशानन लग रहा है.' लगता है तब से ही रावण का उपनाम दशानन प्रचलित हो गया होगा.

रावण के विवाहोपरांत उसकी पतिव्रता पत्नी मंदोदरी ने उसे सदमार्ग दिखाने का बहुत प्रयत्न किया किंतु सदैव असफल रहने से वह प्रायः क्षुब्ध रहती थी. रावण बहुत हठी था. उसका भाई विभीषण भी उसे समझा-समझाकर हताश हो गया था. व्यथित होकर वह तटस्थ हो गया था. उसके दूसरे भाई कुंभ करण ने निराश होकर मौनव्रत धारण कर लिया था. मद में चूर होकर रावण अत्यधिक क्रूर होता गया.

रावण की रूप गर्विता बहन शूर्पनखा ने उसे सीता हरण करने के लिए उकसाया था. सीता को अशोक वाटिका में बंदनी बनाकर रखा गया था. किंतु रावण उनका हृदय जीतने में असफल रहा. राम के भक्त महाबली हनुमान उनकी मुद्रिका लेकर लंका पहुंचकर सीता से मिले थे. हनुमान को बंदी बना लिया गया था. उन्होंने रावण को राम की शरण में जाने का परामर्श दिया तो उनकी पूंद में जलती मशालें बांध दी गई थी. परिणाम हुआ था 'लंका दहन'. हनुमान ने लौटकर सब कथा राम को सुनाई.

विस्तृत वर्णन अनावश्यक है. रामायण पाठक और प्रत्येक वर्ष विजय दशमी पर रामलीला देखने वाले लोग राम कथा से परिचित हैं. राम ने सहयोगियों द्वारा गिरिजनों-आदिवासियों वानरों को संगठित-प्रशिक्षित करके लंका पर आक्रमण कर दिया था. राम चाहते तो अपने कनिष्ठ भ्राता भरत को अयोध्या में संदेश भेजकर सेना दल बुलवा सकते थे किंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया. विभीषण राम की शरण में चले गये. कुंभकरण को विवश होकर युद्ध करना पड़ा और वह शहीद हो गये. रावण का पुत्र मेघनाथ भी युद्ध भूमि में धराशायी हो गया. रावण भी बुरी तरह घायल हो गया. सीता को मुक्त करवा लिया गया.

राम ने लक्ष्मण को मृत्यु शैया पर पड़े रावण के पास उसका अंतिम संदेश लेने भेजा. वह रावण के सिरहाने की तरफ जाकर खड़े हुए और निवेदन किया. रावण चुप रहा. राम ने लक्ष्मण को रावण के पांवों की ओर खड़े होकर विनम्रता पूर्वक संदेश देने के लिए निवेदन करने का पुनः आदेश दिया. उन्होंने आज्ञा पालन किया. रावण ने तीव्र पीड़ा से कराहते हुए प्रायश्चित भरे स्वर में कहा-'पराविधाओं को उचित रूप से प्राप्त न करने के कारण मेरा पूर्ण रूप से विकास न हो सका. मैंने अपने को, अपने परिवार को, अपने राज्य को विनाश के गर्त में धकेल दिया. मैंने सृष्टिकर्ता की शक्ति को नहीं पहचाना. मेरा अनुसरण कोई न करें.

ईश्वर सबको सदबुद्धि दे. हे राम!' लक्ष्मण के हाथ आशीर्वाद के लिए उठ गये. रावण के प्राण पखेरू उड़ गये. रावण का अंत हो गया. रावण के जो दुर्गुण हमारे भीतर हैं, हम उनका अंत कब करेंगे? रामायण में व्यक्त सामाजिक संबंधों की गरिमा को कब समझेंगे? हमारी शिक्षा कब तक अपूर्ण रहेगी.

++++++++++++++++++++++

शेष पृष्ठ ६ का...

नागप्पा जी की जन्मशती पर विशेष

उनसे पहली व आखिरी मुलाकात बेंगलौर में जून २००८ में उनकी एक पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम सुश्री बी. एस. शांताबाई जी के सौजन्य से डॉ० राधा कृष्णमूर्ति जी के साथ हुआ था. मुझे उनके व्यक्तित्व ने बहुत ही अधिक प्रभावित किया था. इस यशस्वी हिन्दी सेवी को उनकी जन्मसदी वर्ष पर पत्रिका व विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान परिवार की तरफ से उनकी अपार हिन्दी सेवा के लिए हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूँ.

जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-

एस.पी.सीबीआई, लखनऊ-०५२२ २२०१४५६, २६२२६८५ और एस.एम.एस ६४१५०१२६३५

पत्रिका के 12वर्ष पूरे करने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की किताबें मुफ्त प्राप्त करें

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक / पंचवर्षीय / आजीवन / संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप..........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूँ. अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्नलिखित पते पर भेजें.

नाम :..

पिता / पति का नाम :...

पता :..

डाकखाना :...जनपद...

राज्य :...पिन कोड...

दूरभाष / मो0...ईमेलः...

विशेष नियमः

01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.

02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें.

03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.

04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.

05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10 / —	$ 1.00 /
वार्षिक	रु0 110 / —	$ 5.00 /
पाँच वर्ष :	रु0 500 / —	$ 150 /
दस वर्ष	रु0 1000 / —	$ 300 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / —	$ 350 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / —	$ 1500 /

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज मासिक

(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011
कानाफुसीः 09335155949 ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

पंछी

✍श्री हरिहर चौधरी,
श्री हरि सदन, लोकनाथ मार्ग, ब्लाक कॉलोनी,
हिंजिलिकाटु, गंजाम, ओड़िसा-७६११०२

गोपालपुर समुंदर के किनारे मैं घूम रहा था. देख रहा था कि कैसे पंछियों के झुंड एक विदेशी जहाज के पीछे दौड़ रहे थे. मानो, आजकल के आदमी विदेशी चीजों के पीछे दीवाने बन गए हैं. फिर भी आजादी के चढ़े परवाने से वे मशगुल हैं ताकि उनके आशय को कोई भी रोक नहीं सकता. चाहे वे नतीजे हासिल करने में कितना भी बुरा हाल क्यों न झेलें. उनका मोह भंग होते वक्त चाहे उनकी ताकत हमेशा के लिए कमजोर क्यों न हो जाए. फिर भी अल्हड़ पंछी रसीली आवाज से मीठे-मीठे अहसास लेकर पराई चीजों के कशीस के मारे क्यों न थोड़ा बहुत अगवानी करें...? बढ़ोतरी तो ख्वाब है. रातों रात लंबी दाढ़ी बढ़ाना तो आज का मकसद बन गया है. ये प्रकृति के जीव भी बदल गए हैं. पंछी उड़ जाते हैं. खूब उड़ते चले जाएं तो इसमें आश्चर्य क्या है? आसमान और पारावार की दिग्वलय रेखा तक उड़ जाते हैं. जहाज का मस्तूल ओझल हो जाता है, फिर भी मालूम होता है कि चिड़ियों की कोशिश नाकामयाब नहीं हो सकती.

मैं भी उड़ता था. बहुत दूर तक उड़ता था. मेरा जहाज तो कब का कब ओझल हो गया था, फिर भी मेरे पंख टूटे नहीं थे. अवश्य ही उनमें तैलाक्त शक्ति महसूस करता था. आंख मूंद कर बगल की नर्म गर्म हवा के झोंको से मैं भी उड़ता था आसमान की ओर और समुद्र के ऊपर दूर क्षितिज की तरफ....! अहिस्ता अहिस्ता मेरा हृदय-कमल खिलता रहता था! आंख मूद कर मैं मकरंद रसानुभूति से भंवरा सा मन को पागल बना देता था. अपने रसाक्त जीवन के प्राचुर्य में अपने मददगार को ढूंढता था.

वक्त के मुताबिक इन्सान का मन भी एक सतह से दूसरी सतह की ओर फिर जाता है. इस बदलाव में उतार चढ़ाव आ जाता है. मौजूदा हालात में फेर बदल भी आ जाते हैं. आदमी पहले की हालत भूल जाता है. नई-नई फिक्र में उलझ जाता है. मैंने भी इसी तरह पहले-पहल उड़न खटौले में सैर करने का एहसास किया है.

स्नातकोत्तर श्रेणी में साहित्य का विद्यार्थी था. अतः रस संचार का अवलोकन आम तौर पर जो हो जाता है, उसका यद्यपि मैं एक अपवाद था, फिर भी बेलाभूमि के नजदीक झांव वन की हवा की हिलोरों में युवा छात्र-छात्राओं की जोड़ियों के पास से गुजरने पर मुझे अनजाने में सिहरन सा होता था. शर्म का आदी था ही. इसलिए समय-समय पर मैं कुण्ठित हो जाता ताकि किसी चहेती साथी-सहेली को मैं पास आने का मौका ही नहीं देता, इस तरह अपांक्तेय बन जाता था, क्योंकि हमारी आर्थिक अवस्था उतनी स्वच्छल नहीं थी जिसके सहारे मैं ऐसे लुभावने दृश्य में शरीक हो पाता. अतः खामोश चेहरे में अंतर्ज्वलन मुझे और आकर्षणीय बना लेता. भीड़ से किसी दोस्त की पुकार छेड़ जातीः हलो नरेश, इतनी भूख और इतनी शर्म....? खिल उठती मन की तरंगे नजदीकी सहपाठिनी के इशारों की खिलखिलाहट में! मैं भी चौक उठता, कुण्ठित भावनााओं में. फिर ज्यों का त्यों...कक्षाध्ययन के लिए शान्त सुधीर हो कर प्रस्तुत हो जाता. उसके बाद मुझे यूं ही लगता था कि स्वाधीन जनतांत्रिक-राष्ट्र के एक युवा छात्र होने के नाते मैं भी सपने देख रहा था. इतने सपने कि सप्तरंगी इंद्रधनुष मुझे बौखला देता....! फिर भी जवानी और कुर्बानी, इन दोनों के मिलावट में मैं अनजाने में झूम उठता.

कभी कभार नजदीक के गोपालपुर के तटीय बालू के टीले पर तन्हाई में बैठ कर सपने तो मैं बहुत देखता, मगर यह भी अनुमान लगाता कि उसके उत्स दिनों दिन सूखते जा रहे थे, क्योंकि हम मध्यवित्त परिवार के थे. मैं तो करीबन बाईस साल की अवस्था में था और घर का सबसे छोटा बेटा था. मुझसे बड़े पैंतीस साल के एक मंझले भाई थे जो एक सामान्य दर्जे के कर्मचारी थे. उन से ऊपर चालीस साल के बड़े भाई भी थे जो मेरे किसान पिताजी के साथ खेतीबाड़ी में सहायक थे. चार एकड़ की जमीन थी जिसमें से धान की फसल हो रही थी. रबी में मूंग, मेड़ पर अरहर भी हुआ करता था जो हमारे गुजरान के लिए उन्नीस बीस हो जाता था. पर लाज काज, हाथ खर्चा, कुशल-क्षेम, दारु-दवे आदि में हमें तकलीफ भी उठाना पड़ता था क्योंकि बड़े भाई के परिवार के दो जवान औलादों की फिक्र भी हमें करनी पड़ती थी. मंझला भाई तो निःसंतान थे. अतः उनके विचलित मन को सही दिशा में लाने की चिंता भी थी. साठ साल की उम्र में पिताजी ज्यादा मेहनत करते थे. हमारी एक एकड़ जमीन पर वे कुम्हड़े उगाते थे मेड़ पर मचान बनाते थे. दोपहर उस

मचान पर बैठते हुए हम बाप बेटे दोनों खेती की देखभाल करते थे. चौकस रह कर आस पास के लावारिस भैंस-भैसाओं को खदेड़ देते थे, जिन्हें न जाने कितने दुष्ट ग्वाल वहां धकेल देते. तब मैं मचान से उतर कर दौड़ता हुआ उन्हें खदेड़ देता और एक हरी ककड़ी भी अपने खेत से लाता. दोनों उस ठण्डी मीठी ककड़ी को नमक मिर्ची लगाकर खाते हुए धूप की गर्मी को शांत करते थे. पिताजी मेरी पीठ थप थपा कर तसल्ली देतेः बेटे, तुम अच्छी तरह पढ़ लिखकर एक बड़ा अफसर बन जाओ. तुम्हारे तनख्वाह से हम अपना ऋण चुका दें ताकि पराए नर्क से हमे छुटकारा मिले. बड़ा भाई तो देखो आलसी है और पाठ न पढ़ने को उसे तो रुचि भी है. फिर मझले को देखो, कैसा आधा पागल होता जा रहा है. बेटे, तुम ही एक अंधे की लकड़ी हो. तुम बढ़ते जाओ...फूलो....फलो...!

मैं बीच बीच में उन्हें कहता, नहीं पिताजी, आजकल तो नौकरी का जमाना नहीं है. सब दिए-दिलाए के बोल बाले हैं. कोई किसी से पूछता तक नहीं. हमें नौकरी की चाह बिल्कुल नहीं रखनी चाहिए. मैं तो मौका निकाल कर बच्चों को पढ़ाऊंगा लेकिन आप तो कहते हैं कि ज्यादा तनख्वाह वाली नौकरी हमें ढूंढनी चाहिए. देखिए पिताजी, अगर हमें अपने मामा का इकलौता वकील बेटा थोड़ी सी मदद दें तो मैं उनके पास वकालत का पेशा शुरू कर सकूंगा. कानून में स्नातक बनने में कितना समय लगेगा. बरना हम जैसे निम्न मध्य वर्गीय किसान के बेटे को कोई क्यों पूछेगा? पिताजी एक लंबी सांस लेकर सिर्फ कहते, बेटा, तू दिल छोटा मत कर! क्योकि कुछ न होने से तो हमारी मिट्टी मां है ही. तुम्हें जरूर वह पनाह देगी. इसीलिए तू खेतीबाड़ी से ध्यान मत हटा! ठीक है पिताजी, मेरी मिट्टी मां तो सुजला और सुफला है. सिचाई की सुविधा भी तो है. सिर्फ मेहनत की जरूरत है. मैं तो कर्म कोढ़ी नहीं हूं लेकिन जमीन जायदाद तो काफी नहीं है. उस पर आप और माताजी की उम्र तो काफी हो चुकी है. इसीलिए आपको अब और मेहनत नहीं करनी होगी. ये धूप के दिनों में तीसरी फसल उगाने का बीड़ा उठाने की उम्र तो ढल गयी है. अब हमारी बारी है. हम दो भाई मेहनत करेंगे. मंझले भाई को हम मिलजुल कर दिग्दर्शन दें ताकि वे सही सलामत अपनी ड्यूटी पर जाएं और हाथ खर्चा सही सलामत आता रहे. हम इस तरह गृहस्थी चलाते जाएंगें. बाबा मुझे शाबासी देते. मैं भी पुलकित हो जाता और ख्वाबों में तैरने लगता. बाबा भी मुझे एक उपदेशात्मक गीत सुनाते- 'अच्छे कर्म निभाते/जो फैलाता नेकनामी,/आखिर नेक ही बच पाएगा होते भी बदनामी.'

और कहते, मेरे आशीर्वाद की छाये में सदैव तुम आगे बढ़ते रहो. कर्मवीर हो तुम! लगन से पढ़ो और तुम्हारी अनमोल भावनाओ को लोककल्याण में लगाओ! खूब मेहनत करो!

मैं भी आत्म-संतोष में झूम उठता. जमीन की लहलहाती फसलों पर हम कुर्बान हो जाते. खरीफ और रबी के लिए हम हमेशा तैयार रहते. परविार की रखवाली भी हमारे पिताजी की कर्मठता से अच्छी तरह हो जाती. बड़े भैया भी काम चलाऊ मेहनत करते और हमारे खुशहाल से सगे संबंधी भी ईर्ष्या करते कि कम आमदनी होते हुए भी वे कैसे सुखी रहते हैं!

धीरे-धीरे सपनों का ताना-बाना बुनने लगा. सपना देखना बुरा नहीं, लेकिन निरा सपना तो कभी-कभी धोका दे जाता है. इससे मैं तो सहमत था ही. फिर भी अवचेतन मन में इन्द्रधनुष तानना कितना सुखद अनुभव है, जिसने परखा है, उसे ही यह मालूम है कि जख्म क्या है, जो जोखिम काम को झेलता है चाव से, आंतरिक कुतूहल से, हाथ की खाज मिटाने के मारे.... ! ऐसे ही मेरी आदत हो गयी थी जब कि मैंने साहित्य सेवा के साथ-साथ कृषि कार्य को भी अपना लिया क्योकि कठिनाई झेलने के बाद जो तृप्ति मिलती, उसे अगर वाङ्मय रूप दे दिया जाय तो उसे दुहराने से कई प्रकार के गम और खुशियों की लहर दिल में हलचल पैदा कर देती है! सपने..सपने..सपने. ..! आंख मूद कर सिनेमा की रील की तस्वीरें..! नरपक्षी होने के सपने.गंधर्व, किन्नर होने के अपने उतावले सपने. ...! अर्द्ध-आकाश में विचरण करने की कल्पनाएं....! सब मुझे अंधा बना दिए हैं....मैं भी आंख भींचकर, बाहें तान कर, कांख में सजल गर्मी गुदगुदी महसूस कर के पसीने से तरबतर जब हो जाता, असलियत मुझे मालूम हो जाती ताकि ये सब बेकार की बातें, फालतू चीजें कैसे मेरे दिमाग से हट जाएं, मैं कामयाब कोशिश करता रहूं और अपने कोहरे की अनुभूतियों को कविता के रूप में कागज पर फौरन मूर्तिमान कर देना बेहतर समझता रहूं! हंसी भी आ जाती! देखता, निहारता अपने पानी पानी होने की हालत को! वक्त का तकाजा भी आ जाता...! सपने टूट जाते...!गंधर्व, किन्नर रूप मेरे हट जाते दिल के परदे से....! मैं फिर एक निरा आदमी हो जाता. स्नातकोत्तर साहित्य का छात्र, एक साधारण किसान का तीसरा बेटा ही मेरा असली परिचय मुझे सही दिशा बतलाता और मैं अपनी राह पर अडिग रह जाता कुछ करने में.

संरक्षण का आरक्षण हो

बस...
जाति आरक्षण
बस....
बहुत हुआ
राजनीतिक अस्थिरता में
राजकीय आरक्षण का क्या होगा,
सामाजिक अव्यवस्था में
सामाजिक आरक्षण क्या होगा,
धार्मिक अंध विश्वासों में
धार्मिक आरक्षण क्या होगा,
देशवासी बेहाल है
आतंकवाद-
महंगाई-
गरीबी से त्रस्त हैं
नहीं चाहिए जाति-धर्म का
कोई भी आरक्षण
बस जीने तो मस्त
सिर्फ चाहिए तो
संरक्षण का आरक्षण।।

जीने के लिए क्यों तड़पते हैं

मंजिल को पाना है
तो कुछ करना है,
कुछ करना है-
तो अब जागना है।।

बहुत दास्तान सुने हैं
नई कहानी लिखना है,
तो जिन्दगी से लड़ना है।।

सद्ज्ञान कोई पाना है
उसे चारों ओर फैलाना है,
चारों ओर फैलाना है
तो सूरज सा चमकना है।।

पवित्र मन भी पाना है
मोक्ष हासिल करना है
तो उसके शरण में जाना है
माना बहुत जी लिया है
अब आज न कल उठना है,
आज न कल उठना है
तो जीने के लिए क्यों तड़पना है।।

ये पब्लिक है

ये पब्लिक है
जे सब जानती है
पर ये पब्लिक न जाने
क्यों नहीं जागती है।।

कहते हैं वे
घर-बार बनवा देंगे
पर ये नादान है
सच-झूठ सब मानती है।।

जानवर का चारा
किस मुंह से खाया
काम एक न किया
फिर तुम्हें राजा बनाती है।।

अंदर-बाहर कुछ भी
पर काले नाम काले काम
कोई पूछता नहीं
अभी पाप का घड़ा भरा नहीं।।

रंगीन काम है सब
रंगीन हाथों को पकड़ो
शर्मनाक कोई काम नहीं
वहां बैठे है राजा बनके।।

-सुनील पारिट
शिक्षाः एम.ए, एम.फिल, बी.एड., पी.एच.डी-हिन्दी
लेखन विधाः कविता, लेख, ग़ज़ल, लघुकथा, गीत और समीक्षा
शोध कार्यः अमरकान्त जी के उपन्यासों का मूल्यांकन, अन्तिम दशक की हिन्दी कविता में नैतिक मूल्य
संपर्कः सरकारी माध्यमिक पाठशाला, लक्कुंडी-५६११०२, बैलहोंगल, बेलगाम, कर्नाटक

बेचारी ये जनता
सब सहती है अपने आप
न जाने कब जल उठेगी
धधकती ये आग की चिंगारी।।

सच ये पब्लिक है
जो सब जानती है
कृष्ण का रूप धरके
कंस का सहार करती है।।

रजिस्टर भी लेते जाओ

डाकुओं ने बैंक के कैशियर को बॉध दिया. कैश लूटकर डाकू जाने वाले थे कि कैशियर ने गिड़गिड़ाकर कहा-मित्रो! कृपा करके रजिस्टर भी साथ लेते जाओ. मेरा हिसाब में चालीस हजार की गड़बड़ है.

टोनी के पापा लौटे है

चोर की मरम्मत करके उसे बेहोश कर देने पर पुलिस इंसपेक्टर ने एक महिला की तारीफ की तो वह बोली-इसमें प्रशंसा की क्या बात है. वास्तव में चोर के आने पर मैं समझी थी कि रात गए टोनी के पापा क्लब से लौटे हैं.

फकीर बाबा, अरिया के फुटकर गीत

✍ हरिहर चौधरी

१

अरिया बाबा कहत तोबा
देखके दुनियादारी,
इक हाथ नापो आधा चलो
आधा ही करो यारी।

२

कोई किसी की पत्नी नहीं,
अथवा नहीं पति,
मतलब की खुजली मिटाने
यहां सब की गति

३.

इतनी चापलूसी इतना प्यार,
नजदीक जाओ तो चकनाचूर।

४.

बद किस्मत के खिलाफ सब
कोई किसी का बेटा नहीं
नहीं किसी की बेटी,
सुख संपदा मंजिल सबकी
अनचाही किस्मत फटी।

५.

होशियारी की ओट में
अगर हो जरा कमजोरी,
दुश्मन निगल जाएगा
मौका होगा चोरी

६

ऐन वक्त पे तुम्हें
जो अचानक ठुकराता,
जिन्दगी भर उससे
न लगाओ कभी नाता।।

७.

असहाय की दशा में
जो मारता तुम्हें ताली,
उसके माहौल में कभी
दिल न करो खाली।

८.

किसी की चपेट में आकर
अपने को न कर टेढ़ा
खामोशी-कोशिश जारी रखो
पार हो जाएगा बेड़ा।

९.

खलबल है दुश्मन
चारों ओर मुसीबत
ठण्डे दिमाग से
सुलगाओ आग
दिल पाएगा राहत।

१०.

फूल समझ के पास आया
तो कांटा चुभ गया
शहद के बदले मुझे
जहर ही मिल गया

११

चकाचौंध जो चीज
उसके भीतर छिपा हुआ है
कमजोरियों का बीज!

१२.

हम जिससे करते हैं आशा
वह अवतार है निरा निराशा।

१३.

आगे चलो किसी से,
न करो इन्तजार
पड़ाव में मत सो जाना
रूक जाएगा जीवन धार।

१४.

दुनिया है दो रंग
एक नरक कुसंग
दूसरा स्वर्ग सत्संग

१५.

खुदगर्ज न हो इतना,
करो दूसरों का ख्याल,
बरना बन जाओ तुम
असहायों की मिशाल

चांद खिलौना प्यारा

✍ नलिनी कान्त,
अंडाल, पश्चिम बंगाल-७१३३२१

आकाश दीप
है सूरज, चांद है
खिलौना प्यारा।
हरेक तारा
टिमटिमाता नैन
परी का न्यारा।
झलमल है
करता दिन-रैन
गगन सारा।
भटक रहा
पवन बनकर
है बनजारा।
नीलाम्बर का
नहीं ओर छोर या
कोई किनारा।
मेघ बेचारा
जहां तहां फिरता
है मारा मारा।
प्रभु जी इस
महाशून्य के तुम्हीं
एक सहारा।

गधे की कमी थी

बस में बहुत भीड़ थी. एक यात्री ने भीतर घुसते हुए कहा-ओह! लगता है बस में जानवर भरे हैं. पास ही बैठे एक सज्जन तपाक से बोले-हां साहब सभी तरह के जानवर यहॉ बैठे हैं बस एक गधे की कमी थी.

गड़गड़ाहट नगाड़े की

✍नरेन्द्र कुमार
सी-४, उत्कर्ष अनुराधा, सिविल लाईन्स,
नागपुर-४४०००१, महाराष्ट्र

गड़गड़ाते बादलों की आवाज
सुनने को
हमेशा मेरे कान
आसमान को अनायास
निहारने लगते हैं
जहां-
बादल का एक टुकड़ा
दो बरसों से देखा नहीं
फिर भी
मेरे काम उस आवाज को
सुनते हैं क्यों
आज
मेरे बापू को भात का
दाना भी दे न सका
मां की आंखों का नीर
चुरा न सका
बरबस
पेड़ की खाल को छील
निकाली सूखी छाल
वह ही चबाने को दे सका
जो जबड़ों की कम से कम
कसरत करा सके, या
खामोश मेरे मां-बापू
जिंदा है
बता सकें
वह दिन भी आ गया
सरकारी नगाड़ा बजा
खाली करो गांव
बांध बनाना है
पैदा होगी यामिनी
शहर जगमगायेंगे
गांव मुस्करायेंगें
फसलें लहलहायेंगी
माटी सौंधी गंध बहायेगी
पर क्या यह हो सका
जानकर परेशान हूं
गांव डूब गया
खेत गये बंजर जमीन मिली
मुस्कराते चेहरे मुरझा गये
जो जिन्दा थे
हो गये मुर्दा
बस यही कहते
यामिनी से अंधेरा भला
मूल्य तो सजोता था
भाईचारे को समझाता था
एक की आह
चार हाथ बढ़ाता था
प्यार का सच्चा सैलाब था
अब गड़गड़ाहट
मुझे सकपका देती है
मेरी छाया मेरा
साया चुराती है, और
सरकार इन लाशों पर
प्रगति का नगाड़ा बजाती है।

जल ही जीवन है

✍पी.एम.जोशी
गुमास्त कालोनी, प्लाट नं०४०, आश्रम रोड
के पास, बिजापुर, कर्नाटक-५८६१०३

जल अमृत है
जल ओषधि है
जल ही सत्य है
जल ही ज्ञान है
जल ही जीवन है

जल के बिना जीवन अधूरा है
जल सभी जीवों के लिए जरूरी है।
जल पांच तत्वों में से एक है
जल इन्द्र देवता का प्रसाद है।।

दुनिया के कुल जल का एक भाग,
नदियों, झीलों व तालाबों में है।
दो भाग बर्फ के रुप में है,
सत्तानवे प्रतिशत जल समुद्रों में है।

समुद्र का सारा जल खारा ही खारा है
खारे जल को पी नहीं सकते
खारे जल से खाना नहीं बना सकते
खारे जल से कपड़े नहीं धो सकते
खारे जल से खेती में सिचाई भी नहीं
कर सकते/उद्योगों-कल कारखानो में
भी खरा जल उपयोगी नहीं

घबराइये मत हमारे-आपके आंसू भी
खारे ही होते है/वर्षा का पानी मीठा
होता है
सूरज और हवा मिलकर खारे जल को
मीठा कर देते है
याद रहे मनुष्य के शरीर में सत्तर प्रतिशत
जल ही है
इसीलिए जन को नमस्कार करो

जल का स्वागत करो
जल का सदुपयोग करो
जल आपको पवित्र बनाता है
क्योंकि जल स्वयं पवित्र है
जल बचाओ-देश बचाओ
पेड़ लगाओ जल को बुलाओ

धरती का श्रृंगार है जल
धरती का हार है जल
धरती का देवता है जल

तभी तो कहता हूं कि जल ही प्राण शक्ति है
जल ही जीवन है जल ही जीवन है

बरखा रानी!

जीवित राम सेतपाल
प्रधान सम्पादक-प्रोत्साहन, सिन्धु
बेसमेंट-२०५, सीव पूर्व, मुम्बई-२२, महाराष्ट्र

हे बरखा रानी,
जन्मते ही दिखा दी जवानी!
पेड़ो को पछाड़,
कइयों को उखाड़,
पिला दिया पानी;
हे बरखा रानी!
दीवार गिरायी,
गिरायी इमारत,
पायी बड़ी महारत,
कुछ हुए ज़ख़्मी,
कुछ ने की रवानी;
हे बरखा रानी!
कहीं गिरायी बाल्कनी तो
कहीं गिराया प्लास्टर,
धरती कही खिसकायी, तो
कांपने लगी रूह थर-थर,
सबने यही बखानी;
हे बरखा रानी!

चूते खप्पर, खोली-खप्पर,
बात पुरानी है;
लेकिन न पोल खोल दी सबकी,
तू है बड़ी लासानी!
हे बरखा रानी!
पोल खोल दी बी.एम.सी की,
खोली पोल सरकारी,
रेल-प्रशासन की खुली पोल,
फट गया सबका ढोल
फिर भी करें अगवानी';
हे बरखा रानी!
डरे हुए सनू पांच से सभी,
फिर से वैसा हो न कभी!
लगे सभी तैयारी करने,
अपना-अपना पेटू भरने,
तेरी महिमा जानी!

हे बरखा रानी!
बिन छाते कुछ को अटकाया,
कुछ को खड़ा पेड़-तले पाया,
चौपाटी से भागी भीड़,
जहां मिला, गयी रस्ता चीर,
कुछ ने खड़े भीगना चाहा,
अल्हड़ जवानी भीगती पाया,
बच्चों ने खेलने की ठानी;
हे बरखा रानी!
कभी तो तू उत्पात मचाती,
आंधी और तूफान है लाती;
बूढ़े जवान सभी को सताती;
कभी-कभी तो सबको सहलाती!
तू जीवन की कहानी!
हे बरखा रानी!

जीवन का उद्देश्य

श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल'
१६१, नेताजी सुभाष रोड, राजा कटरा, दो तल्ला, कोलकाता-७०००७, पंश्चिम बगांल

जब कभी मेरे मन में सवाल है उठता? जिसका जवाब मुझे कभी नहीं मिलता। वर्षो से सोच रहा, दिनो रात खोज रहा। जिन्दगी का असली अर्थ कोई बता दे, अंतिम घड़ी की कड़ी कोई समझा दे। अकाल वियोग जब होता है,/हृदयी हंसा तब रोता है।/भला यह भी कोई नियम है, समय का संयम है?/प्रकृति का बेमेल खेल बड़ा अनोखा है,/जब भी देखा लगता क्या धोखा है?/बड़े-बड़े पण्डितों से पूछा, श्रीमन्तों से पूछा। ज्योतिषियों से पूछा, मनीषियों से पूछा। जन्तर-मन्तर को माना, अन्दर बाहर से जाना।/साधु-सन्तों को देखा, महन्तों को देखा।/ज्ञान के प्रवचनों को सुना, ध्यान से वचनों को गुना।/पर सब के सब विफल, नहीं मिला कोई भी हल। इसलिए आपसे पूछ रहा हूं, कृपया बता देना,/मालूम हो तो उसका पूरा पता देना।/ताकि कहावत सिद्ध हो सके, अब मरे स्वर्ग जाना,/जीते जी का उद्देश्य साक्ष्य सामयिक अपवर्ग पाना।/फिर जीवन की सत्यता भली भांति प्रमाण कर सकें।/उससे मिलकर मन 'मंगल' प्रयाण कर सके।

कविता दौड़ेगी

दर्दो का भारी बोझ हो,
शब्दों की उत्तम खोज हो।
भावों का सुन्दर सोच हो,
वाणी में ऊँचा ओज हो।
चंद्रमा की तिथि दोज हो,
प्यार की पोइट्री या प्रोज हो।
साथ में सखा भोज हो,
कवि की अपनी मोज हो।
ये सारी बातें रोज-रोज हो,
'मंगल' मन की कविता दौड़ेगी।
मुझको तुमको सबाके जोड़ेगी।।

राम रहीम

राम कहो आराम मिलेगा,
रहीम सभी पर रहम करेगा।
दोनों एक ही ब्रह्म के बंदे,
जन जीवन का भरम मिटेगा।
सृष्टि की दृष्टि में समता,
है समदर्शी प्रभु नाम तुम्हारा।
फिर क्यूं मानव मन में भेद,
अंतर का यह बोझ संभारा।
लहू सभी का लाल ललित है,
और न कोई रंग चढ़ाया।
क्यू तब बदरंग करते भाई,
इक़ जमीं इक फ़लक बनाया।
ह से हिन्दू, म से मुस्लिम,
दोनो जुड़कर हम हो जाते।

ग़ज़ल

घर से मेरी तस्वीर हटा क्यों नहीं देते,
गर प्यार है मुझसे तो बता क्यों नहीं देते।
क्यों नाम मेरा मेंहदी से हाथों पे लिखा है,
बचपन की सहेली को बता क्यों नहीं देते।
माहताब निकलने को है बेताब घटा से,
चेहरे से घटाओं को हटा क्यों नहीं देते।
दीदार को बेचैन है भंवरे की तमन्ना,
परदा है जो चेहरे पे हटा क्यों नहीं देते।
कुर्बानी मोहब्बत के खिला देती है गुंचे,
दीवार अमीरी की गिरा क्यों नहीं देते!
हरजाई हूं आवारा हूं बदनाम अगर हूं,
दिल से मेरी यादों को भुला क्यों नहीं देते।
इज़हार मोहब्बत का सरे राह है करता,
मुज़िम है 'जमील' उसको सज़ा क्यों नहीं देते।
++++++++++++++++++++++++++++++++++++
नेता बना है अब तू खाने की बात कर,
खाकर हराम, गंगा नहाने की बात कर।
गीता और कुरआन पढ़ लेना फिर कभी,
तिजोरी का पहले माल पचाने की बात कर।
भारी तुझे पड़े जो उसका तू कर मर्डर,
और लाश को ठिकाने लगाने की बात कर।
मां-बाप के तू नाम पर सरकारी खर्च से,
कालेज हर इक नगर में बनाने की बात कर।
सरकार चाहे बदले कुर्सी को तू मगर,
नोटों के बंडलों से बचाने की बात कर।
मंदिर का नाम ले-के सर पे तू रो 'जमील'
सत्ता का ताज फिर से सजानेकी बात कर।

मुक्तक

मंदिर की आरती हो या मस्जिद का हो अज़ान,
सबको है हक़ बराबर कहता है संविधान।
दुनिया में बेमिसाल है भारतीकी एकता,
सारे जहां में इसलिये भारत हुआ महान!
+++++++++++++++++
लेखक की क़लम देश की शिक्षा के लिए है,
सर वीर का सरहद की सुरक्षा के लिए है।
कमज़ोर समझते हैं हमे जो बता दो उन्हें 'जमील',
भारत का हर एक भारती भारत की रक्षा के लिए है।

✍ **जमील अन्सारी**
निकट चौधरी हास्पिटल, कामठी, नागपुर, महाराष्ट्र

यह शौक यह ख्वाब ऊंचे

यह शौक यह ख्वाब ऊँचे बाद में पालिये।
पहले कन्धे पे पड़ी जवाबदारी सम्भालिये।।
आइना भी अच्छा लगेगा, और अक्स भी।
थोड़ा अपने को किसी आकार में ढालिये।।
सोच रहे हो, जिसकी छाव में कल सूस्ताने की।
आज उसके तनों में पानी तो डालिये।।
घिर के गमगीमों में, बहुत तड़पे हो 'जय'।
अब हंसो भी जीने के लिये, आशू बहुत बहा लिये।

रंग-रंग में है स्नेह मातृभूमि का

कभी कमी ना आने देगें हम भारत की पहचान में।
मरके भी उंगली ना उठने देगे तिरंगे की शान में।
लहु से सींचा है लहू से सींचेगे इस प्यारे उपवनको।
दुनिया पूजे सारी ऐसा बनायेगे इस न्यारे उपवन को।
मोड़ हर तुफा को, लाठी हर जुल्म की तोड़ देंगे हम।
है आशिष मातृभूमि का हर दुष्हास को पछाड़ देंगे।
बसत आयी है वतन के कण-कण में जान हमारी।
ओ दुनिया वालो रही है रहेगी यही पहचान हमारी।
पलट वेग दरिया का कदमों के निशा बनायगे हम।
मनवाके लोहा जश्न सच्ची विजय का मनायगे हम।

चन्द शातिरो न

यहां वहां शातिरों ने खेल ऐसा खेला है।
मिटती सभ्यता सिसकती शिष्टता है।
फैले अन्धकार में दांव पे लगी महानता है।
घिर स्वार्थो में शिष्ट भी पाले अशिष्टता है।
उम्मीदें बेकार सूख रही हैं, रहम कर्म की खेती।
विनाश हेतु, फैली अब पग-२ पे अनिष्टता है।
आश विकास की भला क्या सोच के करे 'जय'
ईमान की खेती को अब सूखाए भ्रष्टता है।
फल-फूल रहे है और पूछ भी खूब है उनकी।
लूट-खसोट और बादियों से जिनकी घनिष्टता है।

✍ **जयसिंह अलवरी**
सम्पादक-साहित्य सरोवर, दिल्ली स्वीट,
सिरुगुप्पा-५८३१२१, बल्लारी, कर्नाटक

शांति की कराह

-वी.के.बालकृष्णन नायर
सचिव, गांधी शांति प्रतिष्ठान, गांधी धाम, कालीकट-३२

मुक्ति नहीं! अब तक-तब तक विश्वर सम हो!
अखिल विश्व में शांति धरा बहाव न हों
मानव क्या सोच रहे हैं आज?
भूचाल कैसे दूर करें!
मानव सोच रहे हैं आज
कैसे रोके रहें सुनामी।
और सोच रहे हैं तनहाई
कैसे हो आपस का सत्यानाश!
भूचाल चल रहा है प्रपंच पर
सुनामी चल रहा है, नियति का नियम है।
रही थी सत्य की कामना, ज़मानों से यहां।
आज असत्य की प्रवंचना हर कहीं।
आज हम क्या देख रहे हैं
दिन-ब दिन काटा पीटा,
नहीं उजाला, न भिनसार कहीं
अंधेरी दृढ़ होती जाती।

काम न पूरा होता कभी
छोड़ दिय भी न पूरा हो या अधूरा।।
बिना सत्य से यह संसार
बिना सपने से भी यह संसार
अधूरा है, अधूरा है, अधूरा ही!
दुनिया बदलती है जल्द से जल्द, पर
बदलता इक विकल्प मात्र न रहे।
एक सपना दूसरे सत्य को,
एक सत्य दूसरे सत्य को
एक मिथ्या दूसरे मिथ्या को
एक पलायन है, बदलाव नहीं।
आज हर कहीं दर्द भरा शब्द!
शांति! शांति! शांति!

जीवन चक्र

जिंदगी रूपी धुरी पर
घूमता है आज मानव
मात्र यह संयोग से है
जो एक रेखा बन गयी है।
जिस धुरी पर घूमता है
अजनबी है तू इधर अब!
यह जीवन वृत्त है तुम्हारी
नियति है अपनी-पराई।
किन्तु जीवन वृत्त है
परिधियों के संकलन पर
और हैं हम तुम दोनों
वृत्त के दो बिन्दुओं पर
परिधियों के बिन्दुओं पर
बिन्दु ही रेखा बनी है।
चक्र, जीवन तुम्हारे
परिधियां ही बिन्दु है
और
हम-तुम बिन्दु हैं
जो रेखा बनी है।

गीतिका

-रमेश चन्द्र शर्मा,
डी-४, उदय हाउसिंग सोसायटी,
बैजलपुर, अहमदाबाद-३८००१५

थके हुए से बैठे
झुके हुए से बैठे
उत्साह उमंग नहीं
चुके हुए से बैठे
अरमान सभी बिखरे
दुखे हुए से बैठे
शेष रहा गया कचरा
नुके हुए से बैठे
वाणी से राख उड़े
फुके हुए से बैठे
पांव न बढ़ते आगे
रूके हुए से बैठे
बोले ना बतियायें
लुके हुए से बैठे।

हम भूल रहे हैं

-जे.वी.नागरत्नमा
सचिव, राजभाषा संघर्ष समिति, कर्नाटक

हम भूल रहे हैं दूध पिलाने वाली मां को
प्यार दिये पिता का
कहानी सुनाने वाली नानी को
चिंता के जीवन में
टी.वी. देखने के मोह में
मोबाइल में बाते करते
हम भूल रहे हैं मां के सच्चे प्यार को
ज्ञान दिये हुए गुरू को
प्यार देने वाले मित्रों को
भाई बहनों को, चाचा-चाची को
बुआ भाभी और बंधुओं को
हम भूल रहे है।
गलतियों को सुधार कर
अच्छा रास्ता दिखाने वाले हितैषी को
काम करना, सबके साथ रहना
कम्प्यूटर के सामने बैठकर
मजे में जीवन चलाते हुए
सब भूल रहे हें हम।

कू कू कू

-डी.के.लिंगराज
बेलगांव, बड़गांव, कर्नाटक

रेल आया चक बुक
पेड़ पर चिड़िया बोली कूकूकू
बिस्किट ले लो
मुंह से जल्दी खा लो
दुष्टों के मन में कपट
लोगों से लेते हैं पीट
नानी की चमड़ी सूखी है
लेकिन कहानी सुनना है
कुत्ता भौंकता है भौ भौ
बिल्ली बुलाती है मियाव मियाव
घोड़ा दौड़ता है टक टक
बूट का शब्द पट पट
पढ़ना है बुक
नहीं तो अध्यापक देते हे किक

पत्रिका का मई अंक मिला. अंक अच्छा बना है, सदैव की तरह इसमें आपकी मेहनत स्पष्ट दिखाई देती है. लोकपाल के मुद्दे पर लेख सामयिक एवं सार्थक है. लोकपाल बिल नहीं बन सकता जब तक सत्ता परिवर्तन न हो.

प्रो० महेन्द्र जोशी,गोपालनगर,म.प्र.

++++++++++++++++++++++

सम्मानित पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का अंक देखकर मुझे प्रचुर प्रसन्नता हुई. अंक में विविध, रोचक, विचार , उत्तेजक पठनीय सामग्री है. आपको साधुवाद

राजन चौधरी, हैदराबाद, आ.प्र.

++++++++++++++++++++++

जून-जुलाई का अंक मिला. सम्पादकीय 'विधायकों व सांसदों की आय में इतना इजाफा क्यों?' शीर्ष से लिखा गया आपक कलम की निर्भीकता, स्पष्टवादिता व साहस का प्रतीक हैं. हादसे और घोटाले नामक लेख राजनीति के ऊपर राजनीतिज्ञों पर करारी चोंट है और उसकी वास्तविक तस्वीर समाज के सामने दिखाने का साहसिक सफल प्रयास है. कहानी 'कंटीली झांड़िया' भी आज के नवाबजादों धनाढ़य परिवारों की सही कथा है. यह अब आम हो गया है. कविताएं और ग़ज़ले भी प्रेरक है. आपके नेतृत्व में संपादन का कार्य निर्बाध रूप से चल रहा है. इसकी मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है. आपको ईश्वर आशीष प्रदान करें और मां सरस्वती की कृपा आप पर सदैव बनी रहें ऐसी ही मंगलकामना के साथ

रमेश चन्द्र त्रिवेदी 'पुष्प' ,
पीलीभीत, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++

पत्रिका कके अंक से यह दुखद समाचार मिला कि आपके पूज्य पिताजी नहीं रहें. स्व० पवहारी शरण द्विवेदी जी के आजीवन समाज, विशेषकर निर्धन व असहायों के लिए सेवाकार्य किया. निश्चय ही ऐसे परोपकारी महामानव को प्रभु अपने श्रीचरणों में स्थान देंगे, ऐसा पूर्ण विश्वास है. साथ ही ईश्वर से आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना है.

उमाशंकर मिश्र
संपादक, यू.एस.एम.पत्रिका, गाजियाबाद, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++

'महिला रचनाकार विशेषांक' निकालकर हम महिलाओं को उपकृत किया है. स्तंभ 'मुद्दा' मे 'स्त्री के सन्दर्भ में धर्म नई व्याख्या हो' चमेली जुगरान का लेख अति सराहनीय रहा. पत्रिका के माध्यम से सभी पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि वे अपने अन्दर के भ्रष्टाचार को खत्म कर नयी जागृति लाएं जिससे आज त्रस्त समाज प्रसन्नता और शान्ति का अनुभव करें. स्थाई स्तंभ सराहनीय हैं. पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु आपको कोटि-कोटि बधाई.

बबीता शर्मा, गाजीपुर, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++

अगस्त-२०१२ का अंक का संपादकीय 'आमिर खान के नाम खुला पत्र' शानदार, निर्भिक और बेवाक है. ढेरो बधाई.

शैलेष गौतम,
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

बेरोजगारी भत्ता और शर्तो की सीढ़िया

घोषणा करते समय यदि महोदय पहले ही बता देते कि शर्तो की अनगिनत सीढ़िया भी हैं तो शायद विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी छोड़कर पंजीकरण के लिए लम्बी लाईन मे न लगते. कुछ तो सुबह का नाश्ता पैक कर ले आते थे. कुछ तो धूप से बेहोश ही हो गये. पंजीकरण कार्यालय में ऐसा लगता है मानों सारे विद्यार्थी, पढ़ी-लिखी महिलाएं यहीं एकत्र हो गई हों. इनसे अच्छे तो इनके पिताजी थे. पिताजी के नक्शे कदम पर बेटा भी चलेगा. इसी हवा ने सभी को पछाड़ दिया. परन्तु बलिहारी है जनता के दिमाग की वह यह क्यों नहीं सोच पाई कि बेटा तो दो कदम आगे ही चलेगा.

रही महिलाओं की बात-महिला के पति की आय यदि शर्ते के अन्तर्गत नहीं आती तो महिलाओं का कुछ भला होता. अरे पति की आय बहुत है तो क्या मतलब? पत्नी तो पढ़ी-लिखी बेरोजगार ही हैं. महोदय की बात से स्पष्ट होता है कि महिलाओं का अपना कोई अस्तित्व हीं नहीं. वैसे भारत देश में हर स्थान पर महिलाओं को वरीयता दी जाती है. यहां पर महोदय ने पति की आय से जोड़कर महिलाओं के साथ ठीक नहीं किया है. बहुत सारी महिलाओं के लिये यह एक हजार की पूंजी मददगार सिद्ध हो सकती थी. पढ़ने-लिखने वाली, शादी-शुदा लड़कियां रूकी हुई पढ़ाई को फिर से गति प्रदान सकती हैं. एक फार्म भी भरा जाए तो ५००रुपये से कम खर्च नहीं होते. परन्तु भारत देश में भांति-भांति के लोग और विचार भी अनेक होंगें. वैसे मुझे लगता है कि भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के रहस्य शायद उजागर हो जाते थे परन्तु इन नेताओं के रहस्यों को समझ पाना बड़ा मुश्किल हैं. और फिर बात वहीं पर आकर टिकती है कि कहीं पर रोटी के लाले, कहीं पर अनगिनत घोटाले।

श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली',
रायबरेली, उ.प्र.

डॉ० द्विवेदी सम्मानित

अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच, उ० प्र० शाखा, अहिसास नासिक, व विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान इलाहाबाद का संयुक्त आयोजन

इलाहाबाद. २७ अगस्त २०१२ को निराला सभागार मे अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच, उ०प्र०शाखा, अखिल हिन्दी साहित्य सभा नासिक, महाराष्ट्र व विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान इलाहाबाद के संयुक्त तत्वावधान में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति सुधीर नारायण अग्रवाल, अध्यक्षता प्रो० डॉ० आर.पी.मिश्रा, पूर्व कुलपति इलाहाबाद विश्वविद्यालय, विशेष अतिथि पंकज त्रिवेदी प्रबंध संपादक नव्या त्रैमासिक, श्रीमती शीला डोंगरे, अध्यक्ष अहिसास संस्था, डॉ० रीता कमल गौतम, श्री राम यादव सेवानिवृत्त आईएएस थे.

इस अवसर पर नव्या त्रैमासिक के द्वितीय अंक का विमोचन तथा गंगा-जुमनी कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया.

कार्यक्रम में विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद न्यायमूर्ति सुधीर नारायण अग्रवाल, प्रो० डॉ० आर.पी.मिश्रा, पंकज त्रिवेदी, श्रीमती शीला डोंगरे, डॉ० रीता कमल गौतम, श्री राम यादव को संस्थान की अध्यक्षा विजय लक्ष्मी विभा व सरंक्षक राजकिशोर भारती द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित भी किया गया.

अहिसास द्वारा न्यायमूर्ति सुधीर नारायण अग्रवाल, प्रो० डॉ० आर.पी. मिश्रा, डॉ० रीता कमल गौतम, श्री राम यादव, डॉ० बाल कृष्ण पाण्डेय को सम्मानित किया गया तथा अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच द्वारा न्यायमूर्ति सुधीर नारायण अग्रवाल, प्रो० डॉ० आर.पी.मिश्रा, पंकज त्रिवेदी, श्रीमती शीला डोंगरे, डॉ० रीता कमल गौतम, श्री राम यादव, वीनस केसरी को विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया.

पत्रिका के संपादक व सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद को अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच की उत्तर प्रदेश शाखा द्वारा साहित्य, सामाजिक, शिक्षा एवं लेखन के हितों में किए गए उत्कृष्ट एवं प्रशंसनीय योगदान हेतु सम्मानित किया गया.

कवि सम्मेलन में प्रद्युम्न नाथ तिवारी ने कहा **'एक-एक करके टूट रहे हैं मेरे अपने संगी साथी'**, ईश्वर शरण शुक्ला ने कहा **'प्रयाग को अब नज़र किसकी लग गयी'** यश मालवीय ने कहा **'कौंध-कौंध कर पिछली बातें मन को उदास करेगी'**, इम्तियाज़ अहमद ग़ाज़ी ने कहा **'खुदा की कसम मैं दोस्ती चाहता हूं.'** रविशंकर मिश्र **'ऊपर हम कैसे उठे टूटी है सीढ़िया'**, सागर होशियारपुरी **'नेता हमारे करते है जनता का यूं ख्याल, जैसे शिकारी करते है अपने शिकार का'** डॉ० सूर्याबाली **'जिंदगी भर कहां समझौता किया जाता है'** जय प्रकश शर्मा **'किसको पता था आसमान गिरेगा'**, तलब जौनपुरी **'सच देखता हूं मगर बोलता नहीं'**, अशोक त्रिवेदी **'जिंदगी में कुछ भी निश्चित नहीं होता'**, सौरभ पाण्डेय, अशोक कुमार स्नेही, पंकज त्रिवेदी, रमेश नाचीज, देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, डॉ० वीरेन्द्र कुमार तिवारी, के.पी.गिरी, हरीश चन्द्र श्रीवास्तव, अशोक त्रिवेदी, विजय मिश्रा, कृष्णेश्वर डींगर, श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, वीनस केसरी आदि कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं का मन मोहा.

अतिथियों का स्वागत अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच, उ.प्र. शाखा के अध्यक्ष डॉ० बालकृष्ण पाण्डेय ने किया. कार्यक्रम का संचालन डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन नव्या प्रतिनिधि वीनस केसरी ने किया.

राजु भैय्या

✍सीता देवी
पत्नी रामकृष्ण उपाध्याय, अन्नपूर्णश्वरी निलय, एनएमसी, तीसरा क्रास, भद्रावती, कर्नाटक-५७७३०३

यह कहानी रामायण या महाभारत के किसी आदर्श व्यक्ति की नहीं राजू भैया की है. हम गांव छोड़कर बेंगलूर आ गये थे. बहुत ढूंढने के बाद मुझे काम मिला, मेरे पति को अधिक न पढ़ने के कारण कोई काम नहीं मिला. काफी मशक्कत के बाद नटराज नाम के व्यक्ति से मेरे पति को एक छोटा-सा काम मिला. उनका आदर्श व्यक्तित्व था. सदा दूसरों की मदद करना, दुखियों को सात्वनां देना, सहायता करने को सदा तत्पर रहना. वे स्नेहमयी, मितभाषी थे सबको सम्मान देते थे. उनको देखते ही गौरव देने की भावना बढ़ती थी. सब लोग प्यार से उन्हें 'राजू भैया' कहते थे. जरूरत पर हर आदमी की सहायता करने को तत्पर रहते. कुछ लोग तो पैसे लेते और वापस भी नहीं करते. उनके मित्र उनसे कहते कि राजू तुम सबको ऐसे ही बाटते रहोगे तो एक दिन खाली हो जाओगे. तब राजू भैया कहते ' उनका ऋण था. इसलिए ले गया.' कई बार धोखा खाने के बावजूद वो सहायता करते रहते. उनसे मेरे पति ने भी सवा लाखा रुपये का ऋण लिया था. वे इसके पहले भी कई बार पैसा लिये थे और वापस कर दिये थे. जब मेरे पति का स्वास्थ्य काफी बीगड़ गया तब वे इस ऋण के बारे में बताये. 'तुम चिंता न करो. अगर मैं मरू तो वे पैसे नहीं पूछेंगें. वे बार-बार कह रह रहे थे. और मेरे पति का निध ान हो गया.

अंतिम संस्कार के बाद मैं अपने सारे जेवर बेंच कर सवा लाख रुपये लेकर उनके घर पहुंची. उन्होंने कहा कोई कर्ज बाकी नहीं हैं. तब मुझे आश्चर्य हुआ, मैं सहम कर कही मुझ पर दया करते हुए कह रहे हैं न? आप भी मेहनत करके कमाते हैं. सूद ज्यादा हुए तो बोलिए मैं दूंगी.

वैसे सूद समेत दो लाख रुपये देना था. लेकिन राजू भैया की सहायता परोपकार की भावना देखकर दंग रह गयी. राजू भैया ने कहा 'मेरी बहन होती तो मुझे तो देना ही पड़ता. मुझे ऐसे ही समझो. मैं सोचने लगी कि अपना खास भाई भी इस तरह उदारता से न देते. यह कैसा मानवीय संबंध था. ऐसे लोग लाखों में एक मिलेगें.

हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाने वाले सम्मानित होंगे

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को संस्थान २००६ से सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं को अपने अंक पत्र, नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित कराकर ३० नवम्बर २०१२ तक नीचे लिखे कार्यालय के पते पर भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पाँच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/ विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में <u>हिन्दी उदय सम्मान</u> व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

हिन्दीतर भाषी राज्यों में स्नातक स्तर हिन्दी विषय वालो को छात्रवृत्ति

हिन्दीत्तर भाषी राज्यों में हिन्दी विषय लेकर स्नातक करने वाले छात्र/छात्राओं कों वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।

अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव के लिए निम्नलिखित पते पर लिखेंः

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.मो० 09335155949

email: sahityaseva@rediffmail.com

डॉ० अनुपम को गंगा मिशन सम्मान

नैनीताल. गंगा प्रदूषण मुक्ति अभियान के अन्तर्गत 'गंगा मिशन' में साहित्यिक योगदान के लिए उत्तराखंड के साहित्यकार डॉ० अनुपम को 'गंगा मिशन सम्मान' से अलंकृत किया गया. यह सम्मान न्यायमूर्ति श्यामल कुमार सेन व प्रहलाद राय द्वारा दिया गया.

'महाग़ज़ल समाधान में अभिव्यक्ति चेतना' का विमोचन

विलासपुर. अखिल भारतीय विकास संस्कृति साहित्य परिषद के तत्वावधान में साहित्यकार इंद्रनाथ सिंह वनसंरक्षक विलासपुर के सद् प्रकाशित ग्रन्थ 'महाग़ज़ल समाधान में अभिव्यक्त चेतना' का विमोचन डॉ० ए.एस. झाड़गावंकर-कुलपति डॉ०सीवी रमन विश्वविद्यालय कोटा के मुख्य आतिथ्य व डॉ० विनय कुमार पाठक की अध यक्षता में किया गया. विदित हो कि इस संग्रह में ६००० शेरों की गज़ल है. इस अवसर पर महेश कुमार शर्मा, संदीप सिंह, कृष्ण कुमार भट्ट, श्रीमती रेखा पालेश्वरर, अनिताा सिंह, हरबंश शुक्ला, ओ.पी.चौबे, डॉ. डी.पी.अग्रवाल, फणीन्द्र राव, हेमन्त पाण्डेय आदि ने अपनी सहभागिता निभाई.

पत्रिका 'उत्कर्ष' का विमोचन

बदायूं. साहित्यिालोक संस्था की स्थानीय शाखा द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता महेश मित्र ने की. इस अवसर पर बाल रचनाकार डॉ० इसहाक तबीब द्वारा सम्पादित पत्रिका 'उत्कर्ष' का विमोचन भी किया गया. कवि गोष्ठी में प्रमोद दर्पण, सुरेन्द्र कुमार नाज़, भारत शर्मा 'राज', कुमार आशीष, दुर्गेश नन्दन, अनिल रस्तोगी, डॉ० साधना अग्रवाल, कामेश पाठक, मोहित 'मगन', विनोद सक्सेना विन्नी ने भाग लिया. इस अवसर पर अरविन्द कुमार गुप्ता, के.वी.गुप्ता, देशबन्धु शर्मा, उमा शर्मा, संजय गोयल आदि लोग उपस्थित थे.

आदर्श प्रधानाचार्या सपना गोस्वामी सम्मानित

नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश की निशा ज्योति संस्कार भारती की प्रधानाचार्या एवं विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की सक्रिय सदस्या **श्रीमती** सपना गोस्वामी को उनके कला, संस्कृति एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए लायन्स क्लब, इलाहाबाद द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर सम्मानित किया गया. विदित हो कि बहुमुखी प्रतिभा की धनी श्रीमती गोस्वामी को कॉलेज जीवन में एनएसएस में राष्ट्रपति पदक भी मिल चुका है और वे कला व संस्कृति की एक अद्वितीय प्रतिभा है. आज भी वो अपनी प्रतिभा का विद्यालय के आयोजनों में साथ ही साथ स्थानीय आयोजनों में बच्चों को निखारने में करती हैं. पत्रिका परिवार की तरफ से इस बहुमुखी प्रतिभा की धनी सक्सियत को हार्दिक बधाई.

कवि रामआसरे गोयल नेपाल में सम्मानित

महाकाली साहित्य संगम द्वारा आयोजित 'नेपाल-भारत साहित्यकार समारोह,महेन्द्र नगर, नेपाल में आयोजित कार्यक्रम में कवि राम आसरे गोयल को उनकी पुस्तक 'सुरबाला' के लिये सम्मानित किया गया.

प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं

धरोहर स्मृति न्यास, बिजनौर द्वारा ३०.११.२०१२ तक प्रविष्टियां आमंत्रित की गयी है: **०१ साहित्य क्षेत्र में:** वर्ष २००१ से २०१० तक प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह/बाल साहित्य की किसी भी विधा के संग्रह एवं व्यंग्य संग्रह के लिए **०२ मानव सेवा एवं साम्प्रदायिक सद्भावनाः** स्वयं द्वारा किए गये मानव सेवा/साम्प्रदायिक सद्भाव संबंधी कार्यो का विस्तृत विवरण. इसके लिए किसी संस्था द्वारा अनुशंसा भी किया जा सकता है. ०३ **श्रीमती कान्ता निशा नारी प्रेरणा पुरस्कारः** लेखन के क्षेत्र में मातृ शक्ति,वर्ष २००१ से २०१० तक प्रकाशित हिन्दी साहित्य की किसी भी विधा संग्रह की तीन प्रतियां **०४ नारी सशक्तिकरण पुरस्कारः** नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र-नारी शिक्षा, रक्षा जागृति, जीवन स्तर में सुधार संबंधी कार्यो के लिए

विस्तृत विवरण, परिचय व फोटो सहित स्पीड पोस्ट/पंजीकृत डाक से भेजें. अन्य किसी जानकारी सम्पर्क करें:

डॉ० अजय जनमेजय
४१७, राम बाग कॉलोनी, सिविल लाईन्स, बिजनौर-२४६७११,
मो० ९४१२२१५९५२

नेता ब्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' का विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद से प्रकाशित प्रस्तुत ६४ पृष्ठीय काव्य संग्रह दो खण्डों में विभाजित है. पहला खण्ड नेता ब्याज स्तुति जिसमें १२ रचनाएं है. पहली रचना 'काव्या हेतु' के कुछ अंश देखिए-

बात-बात में बात बताऊँ,
मतदाता एक राज बताऊँ,
दलदली राजनीति मे हर नेता है,
कोड़ी भाव बिकाऊँ।

प्रथम खंड की अधिकांश रचनाएं नेताओं के इर्द गिर्द घूमती उनकी कारस्तानी को बखान करती जान पड़ती है. 'नेता चरित्रम्' में किस बखूबी से रचनाकार ने नेताओं के चरित्र को ब्यां किया है-

घी के दीपक जलाते नेता,/गिरगिट रंग दिखलाते नेता

++++++++++++++++++++++

आंसुओं से जन प्यास बुझाते नेता,
भक्षक बन रक्षक दुहाई देते नेता।।

++++++++++++++++++++++

नौ सौ चूहे खाकर हंज को जाते नेता
नाना बल जीत, दादा सरकार चलाते नेता

+++++++++++++++++++

गाय मार जूता दान करते नेता
बहती गंगा में हाथ धोते नेता
गणतंत्र में दगाबाज की निशानी नेता
ऊंची दुकान फीका पकवान नेता।।

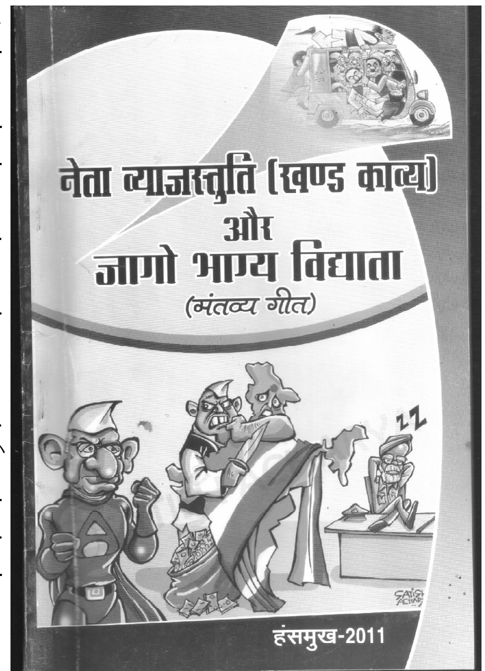

इसके अतिरिक्त नेताजी की आरती, आरती राजनीति की, मंगला चरण, नेताजी वंदन, नेताजी अवतार, नेता हाइकू अच्छी रचनाएं बन पड़ी हैं. वहीं दूसरे खण्ड 'जागो भाग्य विधाता' में समाज की विडंम्बनाओं को परिलक्षित करती रचनाएं समाहित हैं. इनमें मुख्य रूप से धर्म, जाति, मूल्य नामक रचनाएं अच्छी बन पड़ी हैं. शेष रचनाएं भी अच्छी हैं. यद्यपि कुछ भाषागत त्रुटिया है लेकिन हिन्दीत्तर भाषी रचनाकार होने के कारण वे नगण्य मानी जा सकती है. कुल मिलाकर यह कहा जाता सकता है प्रस्तुत संग्रह पठनीय हैं. इस संग्रह का मूल्य मात्र रुपये हैं.

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

आहुति

श्री रामधारी प्रसार 'मीत' द्वारा रचित व श्री श्याम प्रिन्टींग, बर्णपुर द्वारा प्रकाशित प्रस्तुत संग्रह 'आहुति' कुल ६६ पृष्ठों का है। इसका मूल्य मात्र २५रुपये हैं.

बानगी के दौर पर कुछ रचनाओं के अंश देखिए-

क्या यह देश हमारा है/जहां भूख बेवसी की
बेमुख्वत मार है/आज सोने की चिड़िया इतिहास के पन्नों में बद है।

++++++++++++++++++++++

कल यहं दूध की नदिया बहती थीं/झाड़-फानुस की बात क्या झोपड़ी में भी घी बाती जलती थीं/

++++++++++++++++++++++

शाम ढलती है/सूरज न जाने कहा/खो जाता है/तब बल्व अंधकार को/मुंह चिढ़ाता है। और जब, बल्ब फ्यूज हो जाता है। 'दीपक' उन दोनों पर भारी पड़ जाता है।

कुछ रचनाएं जैसे डूबती नाव, आंखों में धुंआ भर जाता है, बिल्ली, फूल बिना पूजा की थाल, मुखौटा, चेहरों की भीड़ में, हमारी आजादी, हम टूट रहे हैं, फिर भी हम महान है, कारगिल आदि रचनाएं अच्छी बन पड़ी है।

रचनाकार को बधाई।